डाक पंजीयन क्र. L/ RNP/म.प्र./ मन्दसौर/122/ 2024- 26
ई-पेपर www.guruexpress.live

बात आपकी, शब्द हमारे

गुरु एक्सप्रेस

सुबह का अखबार

संपादक – आशुतोष नवाल

वर्ष 19 | अंक 233 | पृष्ठ 4 | मन्दसौर | सोमवार 09 जून 2025 | मूल्य 2 रुपया

मौसम दे रहा बच्चों को तनाव

उल्टी-दस्त, पीलिया-बुखार के मामले बढ़े, अस्पतालों में बच्चों की संख्या में बढ़ोतरी

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। वैसे तो मौसम की बेरुखी का असर बचपन से पचपन तक हर उम्र के लोगों पर पड़ रहा है। लेकिन, शारीरिक रूप से सबसे ज्यादा अब मौसम बच्चो को प्रभावित कर रहा है। सरकारी और निजी अस्पतालों में विशेषकर बच्चों की संख्या में अचानक इजाफा हुआ है। उल्टी दस्त के साथ पीलिया और बुखार की शिकायतें लेकर बच्चे अस्पताल पहुंच रहे हैं।

मौसमी बीमारियों का असर इन दिनों बाल चिकित्सालय में देखने को मिल रहा है। बदलते मौसम के साथ ही चिकित्सालय में उल्टी-दस्त, पीलिया और वायरल फीवर से प्रभावित बच्चों की संख्या दिन पर दिन बढ रही है। चिकित्सालय की ओपीडी में पचास प्रतिशत तक का इजाफा हुआ है। यहीं स्थिति निजी अस्पतालों की है। शिशु रोग विशेषज्ञों के क्लीनिकों पर बड़ी संख्या में अभिभावक बच्चों को लेकर पहुंच रहे हैं। इसके अलावा इमरजेंसी में भी परिजन बच्चों को लेकर आ रहे हैं। स्वस्थ होने में तीन-चार दिन लग रहे।

बेमौसम बारिश, अचानक गर्मी...

बारिश के साथ यह रोग बाहरी वस्तुओं के सेवन हो रहा हैं। रविवार को छोड़कर हर दिन बड़ी संख्या में बच्चे मौसमी बीमारियों से ग्रसित होकर अस्पताल पहुंच रहे हैं और कईयों की स्थिति को देखते हुए भर्ती भी किए गए हैं।

यह सावधानी जरूरी...

✲ साफ पानी को उपयोग में लाए। ✲ ताजा भोजन का सेवन करें। ✲ दुकानों पर रखे कटे फलों का सेवन न करें। ✲ बाहरी भोजन के सेवन करने से बचें।

इनका कहना...

शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ केएल राठौर का कहना है कि मौसम का असर बच्चों के स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। उल्टी-दस्त, पेट दर्द, पीलिया, फीवर जैसी समस्या बच्चों में आ रही है। तापमान में उतार-चढ़ाव का असर है। परिजन सतर्क रहे, खासकर बच्चों के खान-पान पर ध्यान रखे।

वर्ष 2017 में सदस्य बनाने के लिए बड़े पैमाने पर सक्रिय हुए थे प्रभावशाली लोग...

आखिर कब होंगे नूतन स्टेडियम समिति के चुनाव..!

✲ अपूर्ण समिति के चलते खेलों का नहीं हो रहा विकास, खिलाड़ियों में भी हो रही अरूचि ✲ आठ साल पहले हुई थी गहमागहमी, चुनाव की चली थी कवायद

फाईल फोटो

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। शहर में खेलो के लिए एकमात्र संजय गांधी स्टेडियम है। जिसे नूतन स्टेडियम भी कहा जाता है। इसे जिला मुख्यालय का सर्वसुविधायुक्त स्टेडियम कहा जा सकता है। इस स्टेडियम के जिर्णोद्धार के लिए पूर्व कलेक्टर स्वतंत्र सिंह ने खासी भूमिका निभाई थी। वर्तमान में यह स्टे डियम अपूर्ण समिति के साथ संचालित है। स्टेडियम कमेटी में सरकारी नुमाइन्दे ही सबकुछ हैं, इसीलिए उनकी मनमानी लगातार जारी है।

स्टे डियम समिति के चुनाव नहीं होने से खेलों का विकास नहीं हो पा रहा है। स्टेडियम में आए दिन क्रिकेट प्रतियोगिताएं हो रही है, जो खेल प्रेमियों के भरोसे है। बता दें कि वर्ष 2017 में स्टेडियम समिति के चुनाव के मद्देनजर बड़ी संख्या में सदस्य बनाए गए थे। सदस्य भी बन गए। लेकिन, उपाध्यक्ष आदि के चुनाव मझदार में अटक गए है। प्रभावशील लोगों ने जो सदस्य बनाए हैं, वे भी बेकार साबित होने लगे हैं। उधर, आठ वर्ष से ज्यादा का समय बीत गया है। इसके बाद भी किसी भी जिम्मेदार ने चुनाव कराने में रूचि नहीं दिखाई है। एक तरह से सभी जिम्मेदार नूतन स्टेडियम समिति के चुनाव को भूल गए हैं। इस कारण खेलों का विकास नहीं हो पा रहा है और खिलाड़ियों में भी मायूसी झलकती है। वर्तमान में यह स्टेडियम एक तरह से शो पीस साबित होने लगा है। यह और बात है कि क्रिकेट से जुड़े लोगों ने स्टेडियम की गरिमा बरकरार रखी है।

पूर्व में नूतन स्टेडियम बेजान सा था। कहने को तो स्टेडियम था, लेकिन लोग इसे खेल मैदान की संज्ञा देते थे। स्टेडियम समिति बनी हुई थी, जो आधी अधूरी ही रही। करीब 22 से 25 वर्षों तक स्टेडियम की देखभाल और उसे अच्छा बनाने में किसी की रूचि नहीं रहीं। पूर्व कलेक्टर स्वतंत्र सिंह द्वारा स्टेडियम को अच्छा खासा बनवा दिया गया है। हालांकि, स्टेडियम अच्छा बनने के बाद इसके चुनाव में भाग लेने के लिए सदस्यों की गोटी बिठाई जाने लगी। अंदर ही अंदर और धीरे-धीरे कई सदस्य आजीवन तक बना दिए गए। स्टेडियम समिति में अध्यक्ष और सचिव का पद पदेन सरकारी अधिकारी का है। लेकिन, बाकी पद के चुनाव होने हैं। उधर, सदस्य बनने के लिए लोगों ने भी अच्छा खासा रूपया लगाया हुआ है। खेलों के विकास के लिए स्टेडियम समिति के चुनाव होना समय की दरकार है।

प्रबंधक के भरोसे पूरा स्टेडियम मेनेजमेंट...

बता दें कि पूर्व में स्टेडियम के मेनेजर कोई और हुआ करते थे, जिसमें राजनीति चली और मेनेजर को बदल दिया गया। वर्तमान में जो मैनेजर हैं, उनके भरोसे स्टेडियम का मेनेजमेंट है । वे अपने हिसाब से मैदान की रखवाली करते हैं। स्टेडियम में टेनिस बॉल से क्रिकेट खेलने पर मनाही भी है।

जब निर्माण हुआ था, तब जाहिर हुई थी कई गड़बड़ियां...

बता दें कि स्टेडियम के नवनिर्माण में करोड़ों रुपए खर्च हुए हैं। जब निर्माण हुआ था, तब गड़बड़ियां भी हुई। इसकी शिकायत तक हुई। शिकायत उज्जैन भोपाल के गलियारे में गूंजी। जहां से अधिकारियों की एक टीम ने आकर मंदसौर में डेरा डाला और स्टेडियम निर्माण की बारीकी से जांच की, जिसमें गड़बड़ियां पाई गई थी। जो कागज में निर्माण करना बताया था, वह समतुल्य नहीं पाया गया। इसकी जांच में क्या खोया और क्या पाया आज तक सामने नहीं आ पाया है।

कार से मिली नौ पेटी शराब, बिलात्री ठेके से भरवाई थी मदिरा

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। सीतामऊ पुलिस ने कॉलेज के पास दम्माखेड़ी कच्चे रास्ते से एक कार से 09 पेटी शराब जब्त की है। पुलिस ने मामले में चार लोगो पर प्रकरण दर्ज किया है। जिसमें एक आरोपी की तलाश की जा रही है। शराब बिलात्री ठेके से भरवाई गई थी।

सीतामऊ पुलिस ने बताया कि सूचना मिलने पर सीतामऊकॉलेज के पास दम्माखेडी कच्चे रास्ते पर दबिश दी गई। इस दौरान इओन कार एमपी 17 सीए 9715 को रोका गया। कार सवार सुनिल पिता गोपाल माली निवासी ढण्ढेडा और अरुण पिता बजेराम भील निवासी दम्माखेडी से पूछताछ कर कार की तलाशी ली गई। जिसमें कुल 09 देशी प्लेन व मसाला शराब की पेटीया (81 बल्क लीटर) मिली। आरोपियों ने पूछताछ में बताया कि बनेसिंह पिता कुशाल सिंह राजपुत निवासी ढण्ढेडा द्वारा अपने साथी नीरज बैरागी निवासी रतलाम के माध्यम से बिलांत्री ठेके से शराब की पेटियां भरवाई थी। पुलिस ने बताया कि मामले में नीरज की तलाश की जा रही है। पुलिस के मुताबिक आरोपियो के विरूद्ध आबकारी अधिनियम की धारा 34 (2) के तहत प्रकरण दर्ज किया गया है।

अफीम पट्टे के विवाद में पीटा

पिपलियामंडी, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। अफीम के पट्टे को लेकर विवाद में मारपीट पर पिता-पुत्र पर केस दर्ज हुआ। मुन्जाखेडी निवासी अमृतराम पिता रामलाल गायरी ने शिकायत दर्ज कराई कि अफीम पट्टे के विवाद में भाई ईश्वरलाल व उसके लडके समरथ ने विवाद किया व मारपीट की थी व ईट की पैर व सीने पर मारी। एक्सरे में फेक्चर आने पर पुलिस ने पिता-पुत्र पर केस दर्ज किया।

कंट्रोल दुकान संचालकों को परेशान कर रहे लोग..!

ई केवायसी के अभाव में कई लोगों का राशन बंद, मशीन नहीं बता रही इंट्री, पोर्टल भी कर रहा परेशान

ई केवायसी कराने के बाद भी उड़े कईयो के नाम, ऐप में इंट्री ही नहीं बता रही मशीन

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। कंट्रोल की दुकानो से राशन के लिए ई केवायसी का बवाल लोगों को खासा परेशान कर रहा है। हजारों लोग अभी भी ई केवायसी से वंचित है। इसका कारण है तकनीकी समस्या। कई लोगों की ऐप या मशीन दोनों ही माध्यम से अभी तक ई केवायसी नहीं हो पाई है। जबकि, 15 जून आखिरी तारीख है। इधर एक और समस्या यह हो रही है कि पांच साल तक के बच्चों की ई केवायसी का कोई प्लान ही नहीं है। जिसके कारण बच्चों के नाम का राशन ही दुकानों तक नहीं पहुंच पाया। वहीं बुजुर्गो के फिंगर प्रिंट सहित अन्य समस्या के कारण ई केवायसी नहीं हो पाई। जिससे उन्हें भी राशन से वंचित रहना होगा।

इधर ऐप में की गई ईकेवायसी को राशन दुकानों पर मशीन शो नहीं कर रही। वहीं कई लोगो द्वारा ई केवायसी करवाने के बाद भी स्वत: ही हटा दी गई है। वहीं पोर्टल भी दिक्कत दे रहा है। ऐसे में अब राशन दुकानों पर विवाद की स्थिति बन रही है। लोग राशन दुकानदारों से बहस कर रहे हैं।

इस संबंध में राशन दुकानदारों से बात की गई। जिसमें सामने आया कि पांच साल तक के बच्चों की ई केवायसी के संबंध में कोई दिशा निर्देश नहीं मिले हैं। जिसके चलते इनके नाम से आने वाला राशन नहीं मिल पाया है। इसके अलावा समस्या आ रही है बुजुर्गो को। कई बुजुर्ग ऐसे है जिनकी ई केवायसी नहीं हो पाई है। इसका कारण है, इनके फिंगर प्रिंट सही नहीं आना। मशीन इन फिंगर प्रिंट को मैच नहीं कर पा रही। इधर ऐप के माध्यम से अगर ई केवायसी का प्रयास किया जा रहा है तो फेस के माध्यम से भी ई केवायसी नहीं हो पा रही।

बार बार उड़ाई जा रही ई केवायसी...

खास बात यह है कि ई केवायसी के नाम पर लोगों को सरकार के कारिंदों द्वारा सिर्फ परेशान किया जा रहा है। तकनीकी संसाधनों के माध्यम से एक बार ई केवायसी होने के साथ ही ओके की रिपोर्ट मिलने के बाद भी लोगों को राहत नहीं मिल पा रही है। इसका कारण है कि केवायसी होने के बाद खुद ही मशीन से अपने आप ही ई केवायसी हट रही है। मतलब ई केवायसी नहीं होना बताया जा रहा है। लोग कई बार ई केवायसी करा चुके हैं। लेकिन, मशीन इसे वापिस हटा रही है।

तकनीकी समस्या, नहीं हो रही ई केवायसी...

अब तक बड़ी संख्या में जरुरतमंद ई केवायसी से वंचित है। इसका कारण है कि तकनीकी समस्या के कारण उनकी ई केवायसी नहीं हो पा रही है। राशन दुकानों पर फिंगर प्रिंट के जरिए ई केवायसी नहीं हो पा रही। इधर ई केवायसी के लिए तैयार किए गए ऐप में भी समस्या आ रही है। लंबे समय से हजारों लोग कोशिश कर रहे हैं। लेकिन ई केवायसी से वंचित है। सबसे बडा तनाव ऐप से की गई ई केवायसी का सामने आया है।

स्वास्थ्य सेवाओं की मांग को लेकर शामगढ़ बंद रहा

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। जिले के शामगढ़ नगर में स्वास्थ्य सेवाओं की खस्ता हालत के विरोध में रविवार को टाइगर फोर्स के नेतृत्व में नगर बंद का आयोजन किया गया। दोपहर 12 बजे तक नगर की सभी दुकानें बंद रहीं। नगर में महिला चिकित्सक की कमी से स्थानीय निवासियों को गंभीर समस्याओं का सामना करना पड रहा है। विशेषकर प्रसव संबंधी चिकित्सा सुविधाओं की कमी से नगर और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं परेशान हैं। स्वास्थ्य केंद्र में आवश्यक चिकित्सा उपकरणों की भी कमी है। प्रदर्शनकारियों ने दोपहर 02 बजे शामगढ तहसीलदार राकेश बिरथरे को मुख्यमंत्री और स्वास्थ्य मंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। इससे पहले भी कांग्रेस और शिवसेना केकार्यकर्ताओं ने धरना-प्रदर्शन कर इस मुद्दे को उठाया था।

नवंबर-दिसंबर में मिलेंगे दस विवाह मुहूर्त

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। विवाह मुहूर्त पर फिर एक बार 08 जून रविवार के बाद ब्रेक लग गया। इस दौरान 12 जून से 08 जुलाई तक गुरु अस्त रहेगा। 06 जुलाई देवशयनी एकादशी से चातुर्मास काल शुरुआत हो जाएगा, इसके बाद 02 नवंबर तक हरि शयन रहने के दौरान भक्त प्रभु भक्ति करेंगे।

पंडितों के अनुसार रविवार के बाद विवाह मुहूर्त अब नवंबर और दिसंबर माह की कुछ तारीख में रहेंगे। इसके बाद 14 दिसंबर से 31 जनवरी 2026 तक शुक्र तारा अस्त रहने से विवाह आदि मांगलिक कार्य पर फिर से रोक लग जाएगी। 26 जून से सर्वार्थ सिद्धी योग में माता‌रानी का आराधना का पर्व गुप्त नवरात्र शुरू हो रहा है। 27 जून को भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा निकाली जाएगी। गुरुपूर्णिमा उत्सव इस वर्ष 10 जुलाई को शहर के गुरु आश्रम और मंदिरों पर मनाया जाएगा।

अवैध डोडाचूरा के साथ एक आरोपी गिरफ्तार

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। सीतामऊ पुलिस ने 20 किलो डोडाचूरा के साथ एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने बताया कि मुखबीर द्वारा प्राप्त सूचना पर कार्यवाही करते हुए ग्राम करणपुरा पुलिया से आरोपी गोपाल पिता हिरालाल कुमावत निवासी करणपुरा के कब्जे वाले दो काले रंग के प्लास्टिक के कट्टे मे भरा कुल 20 किलोग्राम अवैध मादक पदार्थ डोडाचुरा जप्त कर आरोपी को गिरफ्तार किया गया। आरोपी से अवैध मादक पदार्थ डोडाचुरा के स्त्रोत के संबंध मे पुछताछ करते अपने साथी सुरेन्द्र सिंह पिता रामसिंह सौंधिया निवासी लोगनी को देने जाना बताया। प्रकरण मे आरोपी गोपाल से डोडाचुरा के अन्य स्त्रोतो के संबंध मे पूछताछ जारी है। पुलिस ने आरोपी के विरूद्ध एनडीपीएस एक्ट की धारा 08/15 के तहत प्रकरण दर्ज किया है।

मंदिर के पास मिले मांस के टुकड़े, आमजन नाराज

धार्मिक भावनाएं भड़काने का मामला दर्ज, पुलिस जांच जारी

रतलाम, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। शहर के उंक्काला रोड़ पर शीतला माता मंदिर के पास रविवार सुबह मांस के टुकड़े मिलने से सनसनी फैल गई। मंदिर के पुजारी सुबह पहुंचे तो उन्हें मंदिर के बाहर नाले की फर्शी पर मांस के टुकड़े दिखे। उन्होंने तुरंत अपने परिचितों को सूचना दी। कुछ लोग स्टेशन रोड थाने पहुंचे।

सीएसपी सत्येंद्र घनघोरिया व स्टेशन रोड थाना टीआई स्वराज डाबी समेत पुलिस अमला मौके पर पहुंचा। आसपास के लोगों से चर्चा की। मंदिर के पुजारी की शिकायत पर अज्ञात के खिलाफ मामला दर्ज किया।

शीतला माता मंदिर के पुजारी रवि पिता सुनील प्रजापत रविवार सुबह करीब 07 बजे मंदिर का पट खोलने पहुंचे। साफ-सफाई के दौरान उनकी नजर मंदिर परिसर की दीवार के बाहर नाले के ऊपर फर्शी पर गई। जहां मांस के टुकड़े रखे हुए थे। क्षेत्रवासियों को इस बारे में बता कर परिचित संदीप कसेरा व राज शर्मा को बताया। सूचना मिलने पर हिंदू जागरण मंच के कमलेश्वर ग्वालियरी व अन्य जन पहुंचे। पुलिस ने आसपास के सीसीटीवी कैमरे तलाशे। सफाईकर्मियों को बुलाकर मांस के टुकडे उठवाकर अन्यत्र फिकवाए। नगर निगम से फायर बिग्रेड बुलाकर परिसर को साफ कराया। घटना से क्षेत्रवासियों में आक्रोश है। मंदिर के पुजारी रवि प्रजापत की रिपोर्ट पर अज्ञात के खिलाफ धार्मिक भावनाएं भड़काने का मामला दर्ज किया है। पुलिस जांच में जुटी है। जिस जगह मांस के टुकडे फेंके गए। उस जगह दो गाय आकर खडी थी। गाय सूंघ रही थी, तभी मांस के टुकडों की जानकारी लगी।

महिला को जान से मारने की धमकी

पिपलियामंडी, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। महिला को धमकी देने के मामले में दो आरोपियों पर केस दर्ज किया। इमली फाटक निवासी शंकुतला ने नारायणगढ थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि मेरी पूर्व में शादी सुनील प्रजापत के साथ हुई थी। लेकिन पति विवाद करता था, इस कारण मैंने उसे छोडकर 8 माह पूर्व राहुल माली से विवाह कर लिया। सुनील के भाई कमलेश माली व राजू माली ने घर के सामने गाली-गलौज की व दरवाजे पर लातें मारकर धमकी दी कि नारायणगढ में रहोगे तो तुमको जान से मार देंगे। पुलिस ने दोनों पर केस दर्ज किया।

नई टेन्शन: नीमच में कोरोना की इंट्री

जावद के कैंसर मरीज की इंदौर में रिपोर्ट पॉजिटिव, स्वास्थ्य अमला खंगाल रहा कॉन्टैक्ट हिस्ट्री

नीमच, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। प्रदेश में कोरोना के मामले लगातार बढ़रहे हैं। इस बीच तनाव वाली बात यह है कि नीमच जिले में भी कोरोना की इंट्री हो गई है। नीमच जिले में कोरोना का पहला मामला सामने आया है। जावद तहसील के अठाना दरवाजा क्षेत्र का 40 वर्षीय व्यक्ति कोरोना संक्रमित मिला है। मरीज कैंसर के इलाज के लिए इंदौर के अरविंदो हॉस्पिटल में भर्ती है। इलाज के दौरान उसमें कोरोना के लक्षण दिखे और जांच में संक्रमण की पुष्टिहुई।

सूचना मिलते ही सीएमएचओ डॉ. दिनेश प्रसाद के नेतृत्व में स्वास्थ्य विभाग की टीम शनिवार रात जावद पहुंची। टीम ने संक्रमित व्यक्ति के घर का जायजा लिया और संपर्क में आए लोगों की जानकारी जुटाई। मरीज अपनी विकलांग मां और छोटे भाई के साथ रहता है, जो वर्तमान में इंदौर में हैं। फिर भी उनके आवास पर निगरानी बढा दी गई है। प्रशासन ने मरीज के संपर्क में आए लोगों को होम आइसोलेशन में रहने की सलाह दी है। संदिग्धों की पहचान और जांच की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

स्वास्थ्य विभाग जिले के सभी स्वास्थ्य केंद्रों में कोरोना मरीजों के लिए व्यवस्थाओं की समीक्षा कर रहा है। कमियों को तुरंत दूर किया जा रहा है। देश में कोरोना के नए वेरिएंट के प्रसार को देखते हुए नीमच प्रशासन अलर्ट मोड में है। प्रशासन ने टेस्टिंग, आइसोलेशन और इलाज की व्यवस्थाओं को मजबूत करने के निर्देश दिए हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले दिनों में जिले में संदिग्ध मामलों में वृद्धि हो सकती है।

विचार-मंथन

रेपो रेट में कटौती से बढ़ेगी रफ्तार या बनी रहेगी सुस्ती?

कर्ज सस्ता या महंगा होने का हिसाब इसी पर टिका होता है और इसका सीधा और पहला असर उन उपभोक्ताओं पर पड़ता है, जिन्होंने घर, वाहन, अन्य सामान या फिर शिक्षा जैसी जरूरतों के लिए बैंकों से ऋण लिया होता है। पिछले दिनों अर्थव्यवस्था के लिहाज से सकारात्मक खबरों के बीच अब भारतीय रिजर्व बैंक यानी आरबीआइ की ओर से नीतिगत दरों में कमी से यही संकेत उभरता है कि महंगाई अब नियंत्रण में है और आर्थिक मोर्चे पर खड़ी चुनौतियों से पार पाने में देश आगे की राह पर है। आरबीआइ ने शुक्रवार को प्रमुख नीतिगत दर यानी रेपो दर में 0.5 फीसद की कमी करके उसे 5.5 फीसद कर दिया। इसे उम्मीद से ज्यादा की कमी माना जा रहा है। इसके अलावा, एक चौंकाने वाले फैसले के तहत आरबीआइ ने बैंकों के लिए भी नकद आरक्षित अनुपात यानी सीआरआर में भी एक फीसद की कटौती की घोषणा की। यह लगातार तीसरी बार है, जब केंद्रीय बैंक ने रेपो दर में कटौती की है। इससे पहले आरबीआइ ने इसी वर्ष फरवरी और अप्रैल में पच्चीस आधार अंकों की कटौती की थी। जाहिर है, यह न केवल देश के भीतर आर्थिक उतार-चढ़ाव से निपटने की कोशिश है, बल्कि फिलहाल दुनिया भर में जैसी चुनौतियां खड़ी हो रही हैं, उसमें इन उपायों से अर्थव्यवस्था को संभालने में भी मदद मिलेगी। रेपो दरों में कमी को मुख्य रूप से ऋण के लिहाज से सुविधाजनक माना जाता रहा है दरअसल, रेपो दरों में कमी को मुख्य रूप से ऋण के लिहाज से सुविधाजनक माना जाता रहा है। कर्ज सस्ता या महंगा होने का हिसाब इसी पर टिका होता है और इसका सीधा और पहला असर उन उपभोक्ताओं पर पड़ता है, जिन्होंने घर, वाहन, अन्य सामान या फिर शिक्षा जैसी जरूरतों के लिए बैंकों से ऋण लिया होता है या फिर वे लोग, जो इस बात का इंतजार करते हैं कि रिजर्व बैंक की ओर से कब नीतिगत दरों में कमी की जाए और कर्ज सस्ता होने के बाद वे कुछ खरीदने या निवेश करने की योजना बनाएं। गौरतलब है कि रिजर्व बैंक की नीतिगत दरों के अनुरूप ही व्यावसायिक बैंक उपभोक्ताओं को दिए जाने वाले ऋण और अन्य सावधि जमा के मद में ब्याज की दरें निर्धारित करते हैं। इसलिए उम्मीद है कि रेपो दरों में कमी के बाद व्यावसायिक बैंक भी कर्ज की दरें घटाएंगे। इसके बाद स्वाभाविक रूप से कर्ज सस्ता होगा और मासिक किस्तों में कमी की वजह से बैंकों से ऋण लेने वाले उपभोक्ताओं की मांग बढ़ सकती है। साथ ही, पिछले कुछ समय से वाहन बाजार और खासतौर पर जमीन-जायदाद के कारोबार में जिस तरह की मंदी की आशंका जताई जा रही थी, नीतिगत दरों में कटौती के बाद उसमें सुधार आने की उम्मीद की जा सकती है। इस लिहाज से देखें तो रिजर्व बैंक की ओर से नीतिगत दरों में बड़ी कमी की जो घोषणा की है, वह एक तरह से अर्थव्यवस्था को रफ्तार देने की दिशा में एक अहम कदम है। मगर जरूरत इस बात की है कि इस तरह के फैसले सिर्फ घोषणाओं और अर्थव्यवस्था के जटिल गणित तक ही न सिमटे रहें। इसका असर जब तक जमीन पर नहीं दिखेगा, आम लोगों को इसका सीधा फायदा नहीं मिलेगा, वे अपनी जरूरत के लिए घर या कोई अन्य चीज की खरीदारी को लेकर सहज और निर्द्वंद्व नहीं होंगे, तब तक इस तरह के फैसले अर्थव्यवस्था की चुनौतियों को दूर करने में सहायक साबित नहीं हो सकते। महंगाई से राहत और क्रय शक्ति की सीमा में खरीदारी में सहजता से यह तय होगा कि रेपो दरों में कमी का लाभ आम लोगों तक कितना पहुंच पाता है। ऋण लेने का उत्साह उसे चुकाने की स्थितियों पर टिका रह सकता है। इसलिए रोजगार और आय के अन्य माध्यमों की बुनियाद मजबूत करने की स्थिति पैदा करनी होगी, ताकि लोग अपने निवेश और अन्य आर्थिक फैसलों को लेकर सुरक्षित महसूस करें।

अपने कार्यक्रमों में विभिन्न विचारों के महानुभावों को आमंत्रित करने की है संघ की परंपरा

लोकेन्द्र सिंह राजपूत

जो संघ को समझते हैं, उन्हें यह सब सहज ही लगता है। इसलिए नागपुर में आयोजित संघ शिक्षावर्ग 'कार्यकर्ता विकास वर्ग-2' के समापन समारोह में जब मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ के जनजाति वर्ग के कद्दावर नेता अरविंद नेताम को आमंत्रित किया गया, तब संघ को जाननेवालों को यह सहज ही लगा लेकिन संघ के प्रति संकीर्ण सोच रखनेवाले इस पर न केवल हैरानी व्यक्त कर रहे हैं अपितु वितंडावाद भी खड़ा करने का प्रयास कर रहे हैं। हालांकि, उनके वितंडावाद की हवा स्वयं जनजातीय नेता अरविंद नेताम ने यह कहकर निकाल दी कि वनवासी समाज की समस्याओं और चुनौतियों को संघ कार्यक्रम के माध्यम से रखने का सुअवसर मुझे मिला है। उन्होंने संघ के संबंध में एक महत्वपूर्ण टिप्पणी यह भी की है कि इस संगठन में चिंतन-मंथन की गहरी परंपरा है। भविष्य में जनजातीय समाज के सामने जो चुनौतियां आनेवाली हैं, उसमें आदिवासी समाज को जो संभालनेवाले और मदद करनेवाले लोग/संगठन हैं, उनमें हम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को मानते हैं। सुप्रसिद्ध जनजातीय नेता अरविंद नेताम श्रीमती इंदिरा गांधी और पीवी नरसिम्हा राव सरकार में मंत्री रहे हैं। उल्लेखनीय है कि संघ के कार्यक्रमों में महात्मा गांधी, डॉ. भीमराव अंबेडकर और जय प्रकाश नारायण से लेकर श्रीमती इंदिरा गांधी एवं प्रणब मुखर्जी तक शामिल हो चुके हैं। संघ ने कभी किसी से परहेज नहीं किया। संघ अपनी स्थापना के समय से ही सभी प्रकार के मत रखनेवाले विद्वानों से मिलता रहा है और उन्हें अपने कार्यक्रमों में आमंत्रित करता रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का संवाद में गहरा विश्वास है। वर्तमान सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत कहते हैं कि अगर हम विचारों को एक किला बनाकर उसके अंदर अपने आपको बंद कर लेंगे, तो यह व्यावहारिक नहीं होगा। संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार प्रतिष्ठित राजनेता थे। कांग्रेस, समाजवादी एवं कम्युनिस्ट नेताओं के साथ उनका गहरा परिचय था। संघ का दर्शन कराने के लिए डॉक्टर साहब लगातार विभिन्न विचारों के विद्वान व्यक्तियों एवं सामाजिक-राजनीतिक कार्यकर्ताओं से मिलते थे और उन्हें संघ में आमंत्रित करते थे। वे उस समय की चुनौतियों के संबंध में सबसे विचार-विमर्श करके समाधान के मार्ग तक पहुँचने का प्रयास करते थे। संघ के वर्तमान अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर अपनी पुस्तक 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ = स्वर्णिम भारत के दिशा-सूत्र' में लिखते हैं कि किसी विषय पर विभिन्न मत हो सकते हैं, किंतु जब हम समाज के प्रत्येक वर्ग से मिलते हैं, संवाद करते हैं, तो अवश्य ही समाधान निकलता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ 1930 के दशक से ही समाज जीवन में सक्रिय लोगों को अपने कार्यक्रमों में बुलाता रहा है। दरअसल, एक और महत्वपूर्ण बात है यह कि संघ को विश्वास है कि जब तक कोई संघ से दूर है, तब तक ही वह संघ का विरोधी हो सकता है। लेकिन जैसे ही वह संघ के निकट आता है और संघ को जानने-समझने लगता है, तब वह संघ का विरोधी हो ही नहीं सकता। ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जो इस बात को सिद्ध करते हैं। भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन और लोकनायक जयप्रकाश नारायण भी संघ के आमंत्रण पर आ चुके हैं। लोकनायक जयप्रकाश नारायण सम्मानित समाजवादी नेता थे। प्रारंभ में संघ को लेकर उनके विचार आलोचनात्मक थे। लेकिन जब उन्होंने संघ को नजदीक से देखा तब उनके विचार पूरी तरह बदल गए। उन्होंने यहाँ तक कह दिया कि यदि आरएसएस फासीवादी संगठन है तो जेपी भी फासीवादी है। प्रख्यात समाजवादी नेता राम मनोहर लोहिया और संघ के पदाधिकारियों के साथ मित्रतापूर्ण संवाद रहा है। आचार्य विनोबा भावे ने कहा है कि मैं संघ का विधिवत सदस्य नहीं हूं, फिर भी स्वभाव से, परिकल्पना से मैं स्वयंसेवक हूं। परम पावन दलाई लामा संघ के अनेक कार्यक्रमों में शामिल होते रहे हैं, उनका भी कहना है कि मैं संघ का समर्थक हूं। अनुशासन, देशभक्ति और समाज सेवा के लिए यह संगठन जाना जाता है। वर्ष 1977 में आंध्रप्रदेश में आए चक्रवात के समय स्वयंसेवकों के सेवा कार्यों को देखकर वहां के सर्वोदयी नेता श्री प्रभाकर राव ने तो संघ को नया नाम ही दे दिया था। उनके अनुसार- आरएसएस अर्थात् रेडी फॉर सेल्फलेस सर्विस। संघ के कार्यक्रम में जब भी कोई अन्य विचार का व्यक्ति आया है, तब संघ के कार्यकर्ताओं की ओर से कभी उनका विरोध नहीं हुआ। बल्कि स्वयं को अधिक प्रगतिशील एवं लोकतांत्रिक बतानेवाले लोगों ने ही आमंत्रित महानुभावों को रोकने के लिए भरसक प्रयास किए हैं। जब उनके सब प्रयत्न विफल हो जाते हैं, तब ये लोग आमंत्रित महानुभावों की छवि पर हमला करने लगते हैं। उन्हें 'छिपा हुआ संघी' घोषित कर देते हैं। याद हो, वर्ष 2018 में नागपुर के रेशिमबाग में आयोजित संघ शिक्षा वर्ग-तृतीय वर्ष के समापन समारोह में जब पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के शामिल होने का समाचार सामने आया, तब कितना हो-हल्ला मचाया गया। प्रणब दा को रोकने के लिए पत्र लिखे गए, आह्वान किए गए। आखिर में प्रणब दा समारोह में पहुँचे और अपना उद्बोधन दिया। इस अवसर पर प्रणब दा न केवल आद्य सरसंघचालक डॉ. हेडगेवार के घर (संग्रहालय) गए, बल्कि वहाँ उन्होंने विजिटर बुक में लिखा- मैं आज भारत माँ के महान सपूत डॉ. केबी हेडगेवार के प्रति सम्मान और श्रद्धांजलि अर्पित करने आया हूँ। रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया के नेता और दलित नेता दादासाहेब रामकृष्ण सूर्यभान गवई तथा कम्युनिस्ट विचारों वाले जस्टिस वीआर कृष्णा अय्यर भी संघ के कार्यक्रमों में आ चुके हैं। मीनाक्षीपुरम में कुछ हिंदुओं द्वारा धर्म परिवर्तन कर इस्लाम स्वीकार किए जाने की घटना के बाद श्री गवई ने स्वयं संघ के कार्यक्रम में आने की इच्छा व्यक्त की थी और अपने विचार रखे थे। केरल की पहली कम्युनिस्ट सरकार में मंत्री रहे जस्टिस वीआर कृष्णा अय्यर ने स्थानीय विरोधों के बावजूद तत्कालीन सरसंघचालक से संपर्क किया और बाद में पत्रकारों के सामने अपने विचार रखे थे।

लू से 700 मौतें हो गई, राजनीतिक दलों ने उफ तक नहीं की

योगेंद्र योगी

मुद्दा यदि वोट बैंक से जुड़ा हुआ हो, तभी राजनीतिक दल कुछ गंभीरता बेशक दिखा लें किन्तु लोगों के जीवन-मरण जैसे मुद्दों से लगता यही है कि उनका कोई सरोकार नहीं रह गया है। यदि ऐसा नहीं होता तो अदालतों को मौसम की मार से होने वाली मौतें रोकने के लिए सरकारों को दिशा-निर्देश नहीं देने पड़ते। आश्चर्य की बात यह है कि प्रतिकूल मौसम से आम लोगों को बचाने की जिम्मेदारी केंद्र और राज्यों की सरकारों की है, किन्तु यह काम भी अब अदालतों को करना पड़ रहा है। इससे सवाल खड़ा होता है कि आखिर सरकारों की जरूरत कितनी सीमित रह गई है। हीटवेव से 700 से ज्यादा मौतों के मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र से जवाब मांगा है। शीर्ष अदालत ने पूछा है कि इतने बड़े मौसमी संकट से निपटने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर क्या तैयारी की जा रही है। प्रधान न्यायाधीश बीआर गवई और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने गृह मंत्रालय, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और अन्य को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। यह याचिका पर्यावरण कार्यकर्ता विक्रांत तोंगड़ ने दाखिल की। उन्होंने कोर्ट से गुजारिश की है कि सरकार को गर्मी की चेतावनी देने वाली प्रणाली, हीटवेव की पहले से जानकारी देने की व्यवस्था, और 24 घंटे काम करने वाली राहत हेल्पलाइन जैसी सुविधाएं लागू करने के निर्देश दिए जाएं। याचिका में यह भी बताया गया है कि 2019 में राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने हीटवेव से निपटने के लिए राष्ट्रीय दिशानिर्देश जारी किए थे, लेकिन कई राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने अब तक उस पर काम ही नहीं किया। याचिका में यह भी जिक्र है कि आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 की धारा 35 के अनुसार केंद्र सरकार की जिम्मेदारी है कि वह इस तरह की आपदा से निपटने के लिए पुख्ता इंतजाम करे। इससे पहले राजस्थान हाईकोर्ट ने अधिकारियों के रवैये पर गहरी नाराजगी जाहिर करते हुए कहा था कि पिछले साल दिए गए अदालत के निर्देशों को ठंडे बस्ते में डाल दिया गया। कोर्ट ने कहा कि यह कानून के शासन पर सवाल उठाता है। अधिकारी स्वयं को कानून से ऊपर मान रहे हैं, लेकिन कोर्ट आंख बंद करके नहीं बैठ सकता। इंसानों से जानवरों जैसा बर्ताव नहीं हो सकता और न जान बचाने के लिए धन की कमी का बहाना चल सकता। कोर्ट ने मुख्य सचिव से अदालती आदेशों की पालना के लिए समन्वय समिति बनाने और लू से बचाव के लिए कार्ययोजना बनाने का निर्देश दिया, वहीं केन्द्रीय गृह मंत्रालय, मुख्य सचिव व राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण तथा केन्द्र व राज्य सरकार के 10 अधिकारियों को नोटिस जारी कर जवाब मांगा। मई के पहले सप्ताह में राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग (एनएचआरसी) ने देश के उत्तरी, मध्य और पश्चिमी भागों में गर्मियों के दौरान पड़ने वाली लू के मद्देनजर 11 राज्यों से कहा है कि वे कमजोर लोगों, खासकर आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों, बाहरी कामगारों, वरिष्ठ नागरिकों, बच्चों और बेघर लोगों की सुरक्षा के लिए तत्काल एहतियाती कदम उठाएं, जो पर्याप्त आश्रय और संसाधनों की कमी के कारण जोखिम में हैं। वर्ष 2018 से 2022 के बीच गर्मी और लू के कारण 3,798 लोगों की मौत के बारे में एनसीआरबी के आंकड़ों पर प्रकाश डालते हुए आयोग ने एकीकृत और समावेशी उपायों की तत्काल आवश्यकता पर जोर दिया है। आयोग ने पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र और राजस्थान के मुख्य सचिवों को लिखे पत्र में आश्रयों की व्यवस्था, राहत सामग्री की आपूर्ति, कार्य घंटों में संशोधन और गर्मी से संबंधित बीमारियों के इलाज के लिए मानक प्रक्रियाओं की उपलब्धता की मांग की है। भारत में वर्ष 2001 से 2019 के बीच हीटवेव यानी लू से करीब 20,000 लोगों की मौत हुई है। एक अध्ययन में यह खुलासा हुआ कि पुरुषों में लू से होने वाली मौतों की आशंका ज्यादा पाई गई। एक और हालिया अध्ययन में यह बताया गया है कि हीटवेव से होने वाली मौतें जातीय आधार पर भी बंटी हुई हैं। भारत में हाशिए पर मौजूद समुदायों से ताल्लुक रखने वाले लोगों की मौतें, अन्य समुदायों की तुलना में, लू से कहीं ज्यादा हुई। अध्ययन करने वाले शोधकर्ताओं का कहना है कि यह एक तरह की थर्मल इनजस्टिस (गर्मी से जुड़ा अन्याय) की स्थिति है।

डोनाल्ड ट्रंप का रवैया हैरान करने वाला- भारत को नए रास्ते पर जाना ही पड़ेगा!

भारत की घरेलू राजनीति में मचे बवाल के बावजूद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप लगातार अपने दावे को दोहरा रहे हैं और इससे यह बात साफ होती जा रही है कि वह अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में भारत की साख का अपने फायदे के लिए दुरुपयोग करना चाहते हैं। भारत और पाकिस्तान के बीच जारी तनाव फिलहाल कम होने का नाम नहीं ले रहा है। भारत की बहादुर सेना से बुरी तरह से मात खाने के बावजूद पाकिस्तान का बड़बोलापन जारी है। भारत जैसे ताकतवर देश के लिए पाकिस्तान कोई बड़ी चुनौती नहीं है लेकिन वह आतंकवाद को अपनी विदेश नीति का अभिन्न अंग बना चुका है। ऐसे में सब कुछ जानने और समझने के बावजूद दुनिया के कई देशों का विचित्र रवैया काफी हैरान करने वाला है। चीन के डर को तो समझा जा सकता है क्योंकि उसने भारत के एक बड़े भूभाग पर अवैध कब्जा किया हुआ है। चीन को हमेशा यह डर सताता रहता है कि ताकतवर भारत उससे अपनी भूमि वापस ले लेगा जिससे उसके मंसूबे धरे के धरे रह जाएंगे। लेकिन दुनिया के सबसे ताकतवर लोकतांत्रिक देश अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का रवैया काफी हैरान करने वाला है। भारत के प्रधानमंत्री ने पिछले राष्ट्रपति चुनाव में अमेरिका जाकर डोनाल्ड ट्रंप के चुनावी अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस बार डोनाल्ड ट्रंप की जीत में अमेरिका में रह रहे भारतीय मूल के लोगों की बड़ी भूमिका रही है। भारत दुनिया का सबसे विशाल और प्राचीन लोकतांत्रिक देश है और इस नाते अमेरिका का हर नेता भारत के महत्व को अच्छी तरह से समझता है। विश्व शांति, जलवायु परिवर्तन और वैश्विक व्यापार सहित शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र होगा,जिसमें भारत ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका ना निभाई हो। वर्ष 1947 में आजाद होने के बाद से ही भारत की सभी सरकारों ने बातचीत,संवाद और शांति की हमेशा वकालत की। भारत के बिना आज किसी भी अंतर्राष्ट्रीय संगठन की सफलता सुनिश्चित नहीं हो सकती लेकिन इसके बावजूद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अपने बयानों और फैसलों से भारत के लिए लगातार असहज स्थिति पैदा कर रहे हैं। चुनाव के बल पर अमेरिका में दूसरी बार राष्ट्रपति बने डोनाल्ड ट्रंप इस बात को बखूबी समझते हैं कि उनके हर बयान का असर भारत की घरेलू राजनीति पर पड़ता है। लेकिन इसके बावजूद वह लगातार, दुनियाभर में घूम-घूम कर यह दावा कर रहे हैं कि उन्होंने व्यापार रोकने की धमकी देकर भारत और पाकिस्तान के बीच युद्धविराम करवाया था। भारत द्वारा इनकार करने के बावजूद ट्रंप चुप होने को तैयार नहीं है और हर बार उनका बयान देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और सत्तारूढ़ गठबंधन के लिए असहज स्थिति पैदा करता हुआ नजर आता है। भारत में कांग्रेस समेत तमाम विपक्षी राजनीतिक दल डोनाल्ड ट्रंप के बयानों का हवाला देते हुए मोदी सरकार पर सरेंडर करने का आरोप लगा रहे हैं। देश के 16 विपक्षी राजनीतिक दलों के नेताओं ने एकजुट होकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर, इन तमाम मसलों पर चर्चा के लिए संसद का विशेष सत्र बुलाने की मांग की है। इससे यह बात साफ होती जा रही है कि वह अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में भारत की साख का अपने फायदे के लिए दुरुपयोग करना चाहते हैं। अमेरिका के वाणिज्य मंत्री हावर्ड लुटनिक ने तो खुलकर कह दिया है कि भारत द्वारा रूस से सैन्य साजो-सामान खरीदने और ब्रिक्स समूह में शामिल होने के कारण अमेरिका भारत से नाराज है।

उद्धव–राज ठाकरे के साथ आने की सुगबुगाहट तेज

आज का राशिफल

मेष

वृषभ

मिथुन

कर्क

सिंह

कन्या

तुला

वृश्चिक

धनु

मकर

कुंभ

मीन

सुडोकू पहेली क्रमांक- 5620

	4					5	6	
	3	9			8		7	
7			2	5				
3	1				6	7		
		5		7		1		
		6	4				8	9
				9	7			2
	2		8			6	5	
	8	1					9	

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5619

3	9	2	8	5	1	6	7	4
6	8	7	4	2	3	1	9	5
4	5	1	9	7	6	2	8	3
5	6	9	2	3	4	8	1	7
2	3	8	7	1	5	4	6	9
1	7	4	6	9	8	5	3	2
9	1	6	3	4	2	7	5	8
8	2	3	5	6	7	9	4	1
7	4	5	1	8	9	3	2	6

वर्ग पहेली 5620

संकेत: बाएं से दाएं

1. [illegible] संगीतकार जिनका जन्म 3 सितंबर 1944 है (4)
4. 1971 को यह देश स्वतंत्र राष्ट्र बना (3)
7. जल से उत्पन्न वस्तु (3)
8. पवित्र, पाक, पापहीन (3)
9. कल्पवृक्ष, अमरतरु, कल्पतरु (4)
12. आदर देना, आज्ञा पालन करना (3)
14. तिरस्कृत, अनाहत, अपमानित (3)
15. कोलकाता से 150 किमी दक्षिण पूर्व सुंदरवन में स्थित प्रसिद्ध तीर्थ (5)
18. शिवाला, टहल, परिचर्या (2)
20. विद्युत्पात, वज्रपात (2)
21. धैर्यहीन, अधीर, बेसब्र (3)
23. एक स्त्री से प्रेम करने वाले दो व्यक्ति का परस्पर यह कहलाते हैं (3)

संकेत: ऊपर से नीचे

1. इसे मलयाली में कांडा कहते हैं (2)
2. रेल लाईन (4)
3. शर्म, हया, लज्जा (2)
4. नरमुंडों की माला पहनने के कारण भगवान शंकर का एक नाम (5)
5. नेता या सेठ (संक्षिप्त) (2)
6. [illegible] (4)
9. वृक्ष, पेड़, झाड़ (2)
10. इंदौर के संगीतज्ञ मनोहर पटवर्धन द्वारा विकसित वाद्य यंत्र (4)
11. टौंस नामक नदी, [illegible] पर्वत से निकल गंगा नदी में मिलने वाली नदी (3)
13. विश्वकर्मा के पुत्र नल द्वारा बनाया गया रामेश्वर के निकट समुद्र पर बंधा पुल (4)
14. धन संपत्ति, स्वर्ण (2)
16. भोजन में मसाले के रूप में उपयोग में आने वाले [illegible] (3)
17. निर्धन, कंगाल, दरिद्र (3)
19. न्यौछावर करना, उत्सर्ग करना (3)
21. किसी वस्तु को पाने का अल्प निश्चय (2)

वर्ग पहेली 5619 का हल

[illegible]

प्रदेश में बढ़ने लगी तपिश, ग्वालियर-चंबल क्षेत्र में चल सकती है लू

भोपाल निप्र। दक्षिण-पश्चिम मानसून अभी भी मुंबई में ठहरा हुआ है। वैसे तो अलग-अलग स्थानों पर पांच मौसम प्रणालियां मौजूद हैं, लेकिन पर्याप्त नमी नहीं मिलने के कारण मध्य प्रदेश में अधिकतम तापमान बढ़ने लगा है। इसी क्रम में शनिवार को प्रदेश में सबसे अधिक 42.2 डिग्री सेल्सियस तापमान गुना एवं खजुराहो में दर्ज किया गया। सुबह साढ़े आठ बजे से शाम साढ़े पांच बजे तक नर्मदापुरम में पांच एवं इंदौर में 0.5 मिलीमीटर बारिश हुई। मौसम विज्ञानियों के अनुसार चार दिन में अधिकतम तापमान में तीन से चार डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी हो सकती है।

यहां चल सकती है लू: ग्वालियर, चंबल एवं सागर संभाग के जिलों में कहीं-कहीं लू भी चल सकती है। मौसम विज्ञानी वीएस यादव ने बताया कि वर्तमान में मानसून की उत्तरी सीमा मुंबई, अहिल्यानगर, आदिलाबाद, भवानीपटना, पुरी, बालुरघाट से होकर ही गुजर रही है। एक पश्चिमी विक्षोभ पाकिस्तान के आसपास द्रोणिका के रूप में बना हुआ है।

पूर्वी मध्य प्रदेश के ऊपर बना चक्रवात: उत्तर-पश्चिमी राजस्थान और उसके आसपास हवा के ऊपरी भाग में चक्रवात बना हुआ है। उत्तर-पश्चिमी उत्तर प्रदेश और उसके आसपास भी हवा के ऊपरी भाग में चक्रवात मौजूद है। इसी तरह उत्तर-पूर्वी मध्य प्रदेश पर भी हवा के ऊपरी भाग में चक्रवात है। इसके अतिरिक्त पूर्व विदर्भ से उत्तरी कर्नाटक तक एक द्रोणिका बनी हुई है, लेकिन हवाओं के साथ पर्याप्त नमी नहीं आ रही है। इस वजह से तापमान बढ़ने लगा है। इस तरह की स्थिति चार दिन तक बनी रह सकती है। इस दौरान ग्वालियर, चंबल एवं सागर संभाग के जिलों में कहीं-कहीं लू भी चल सकती है।

प्रदेश के 10 शहरों में पारा 40 डिग्री के पार

प्रदेश में शनिवार को मौसम के दो रंग देखने को मिले। इंदौर, नर्मदापुरम और बड़वानी के क्षेत्र में हल्की बारिश हुई। वहीं, ग्वालियर समेत 10 शहरों में दिन का तापमान 40 डिग्री के पार रहा। मौसम विभाग के अनुसार, खजुराहो और गुना में पारा 42.2 डिग्री सेल्सियस रहा। वहीं, ग्वालियर, नौगांव, सतना, टीकमगढ़ और शिवपुरी में 41 डिग्री या इससे अधिक दर्ज किया गया। उज्जैन, सीधी, रीवा, सागर और रतलाम में तापमान 40.2 से 40.8 डिग्री तक रहा।

इसलिए बदला मौसम

आईएमडी की सीनियर वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया, साइक्लोनिक सर्कुलेशन की एक्टिविटी की वजह से मौसम बदला हुआ है। बनी हुई है। इस वजह से आंधी-बारिश वाला मौसम है। अगले 4 दिन ऐसा ही मौसम बना रहेगा। इस बार भीषण गर्मी में भी आंधी-बारिश वाला मौसम रहा। प्रदेश में 26 अप्रैल से आंधी-बारिश का दौर शुरू हो गया था, जो 7 जून को भी जारी रहा। यानी, लगातार 43 दिन से प्रदेश के किसी न किसी जिले में पानी गिर रहा है, या आंधी चल रही है। शनिवार को भी कई जिलों में बारिश का दौर बना रहा।

मन को सकारात्मक रखकर जीवन को उत्सव बनाइए-ईवी गिरीश

ब्रह्माकुमारी के आध्यात्मिकता के पथ पर जीवन उत्सव का दूसरा सत्र का विधायक जैन, पुलिस कप्तान आनंद के आतिथ्य में सम्पन्न

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आध्यात्मिकता के पथ पर जीवन उत्सव के तहत अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मोटिवेशनल वक्ता एवं कॉरपोरेट ट्रेनर प्रोफेसर ईवी गिरीश ने कहा कि मनुष्य तमाम प्रयासों के बाद भी खुश नही रहता है इस नकारात्मकता से बाहर आने के लिए हमे जीवन को उत्सव बनाना आवश्यक है।

ईवी गिरीश भाई स्थानीय कुशाभाऊ ठाकरे ऑडिटोरियम में आयोजित पांच दिवसीय आयोजन के दूसरे सत्र में संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि विधायक विपिन जैन, जिला पुलिस अधीक्षक अभिषेक आनंद, वरिष्ठ अभिभाषक प्रकाश रातड़िया उपस्थित थे। दीप प्रज्वलन में वरिष्ठ पत्रकार डॉ घनश्याम बटवाल, ब्रजेश जोशी, समाजसेवी दृष्नंद नेनवानी भी उपस्थित थे। ईवी गिरीश ने कहा कि आध्यात्मिकता और धर्म मे काफी अंतर है, मनुष्य ने धर्म को लेकर भेदभाव किया है। मेरा धर्म अलग आपका अलग, मेरे कर्मकांड अलग, आपका अलग लेकिन अध्यात्म सबको जोडने न्का काम करता है। गुस्से का कोई धर्म नही होता, दु:ख का कोई धर्म नहीं होता केवल मनुष्य ने धर्म को विभजित किया है। आपने कहा कि मनुष्य ने जहां भी अपनी बुद्धि को लगाया है उसका एक मात्र उद्देश्य मानव जीवन को आसान बनाना रहा है बावजूद इसके मानव जीवन आसान होने के बजाय जटिल हो गया है। क्योंकि बाह्य जगत में मनुष्य ने खूब तरक्की कर ली परन्तु अंदर की दुनिया मे हम पिछड गए। शिक्षा पध्दत्ति में भी तनाव मुक्ति के लिए कोई व्यवस्था नही है जबकि मन को नियंत्रित करना सबसे जरूरी है। बाहर के लिए हम मजबूत है लेकिन अंदर के मन को नियंत्रण करने के लिए सबसे कमजोर है। आपने कहा आज श्री की मत को छोड़कर हमने अपने मन की मत को मानना शुरू कर दिया जबकि एक गाड़ी भी खरीदते हैं तो उसके मैन्युअल का अध्ययन करते हैं, उसी के अनुसार गाडी को चलाते हैं लेकिन हम कीमती जीवन को अपने अनुसार ही चला रहे हैं। सिगरेट पीना जितना खतरनाक है उतना ही गुस्सा खतरनाक है। जीवन को आनंदमय बनाने के लिये जरूरी है मन को ठीक रखना जरूरी है। जीवन की सत्यता को स्वीकार कीजिये और अपने मन को शांत रखिये तो आपका जीवन उत्सव बन जायेगा।

विधायक विपिन जैन ने कहा कि आध्यात्मिक ऊर्जा का केंद्र ब्रह्माकुमारी संस्थान है। यहां से सभी को जुड़कर आने जीवन को आनंदमय बनाना चाहिए। जिला पुलिस अधीक्षक अभिषेक आनंद ने कहा कि जीवन मे सकारात्मक रहे। संकट में ईश्वर की याद आती है। ब्रह्माकुमारी के मुख्यालय माउन्ट आबू जाने का अवसर मिला है, मैने अनुभव किया कि संकट के दोर में जब हम सकारात्मक रहते हैं तो ईश्वर हमे रास्ता दिखाता है, हाथ पकड़कर हमे आगे बढ़ाता है। वरिष्ठ अभिभाषक प्रकाश रातड़िया ने कहा कि चार दशक से अधिक समय से आध्यात्मिक जागरण ब्रह्माकुमारी द्वारा किया जा रहा है। मैत्री भाव जीवन मे आ जाएं, इसमें अहिंसा, प्रेम, करुणा शामिल हैं। व्यक्ति की अच्छाई पर ध्यान जाए, दु:खी की सहायता के लिए अग्रसर हों जाये यही मानवता है। स्वागत भाषण देते हुए आत्म कल्याण भवन की संचालिका उषा दीदी ने कहा कि वर्तमान दौर में मनुष्य तनावग्रस्त है, व्यक्ति खुशी की तलाश में भटक रहा है। मानव के इसी भटकाव को समाप्त करने के अभियान में इवी गिरीश भाई जुटे हुए हैं। प्रारम्भ में द्वीप प्रज्वलन कर समारोह का शुभारंभ किया गया। इससे पूर्व ब्रह्माकुमारी बहनों ने अतिथियों का बेंच लगाकर पुष्प गुच्छ भेट कर सम्मान किया। समारोह का संचालन बीके हेमलता दीदी ने किया।

कांग्रेस नेताओं को तय करनी होगी प्राथमिकता- गांधी

भोपाल, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। कांग्रेस में अब संगठन का काम करने वाले और चुनाव लड़ने वाले नेता अलग होंगे। जिन संगठन पदाधिकारियों को चुनाव लड़ना है, उन्हें पद छोड़ना होगा। इस पर पार्टी नेता और लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी की उपस्थिति में हुई प्रदेश कांग्रेस की राजनीतिक मामलों की समिति की बैठक में सहमति बनी है। ऐसे नेताओं को पद कितने समय पहले छोड़ना होगा, यह संगठन स्तर पर चर्चा के बाद तय किया जाएगा। मध्य प्रदेश में कांग्रेस ने नगरीय निकाय, विधानसभा और लोकसभा चुनाव में पार्टी पदाधिकारियों को चुनाव लड़ाया था।

संगठन पदाधिकारियों को चुनाव लड़ाने पर हुआ नुकसान–पिछड़ा वर्ग कांग्रेस के अध्यक्ष सिद्धार्थ कुशवाह को सतना नगर निगम के महापौर, आदिवासी कांग्रेस के अध्यक्ष रामू टेकाम को बैतूल लोकसभा सीट, युवा कांग्रेस अध्यक्ष डा.विक्रांत भूरिया का विधानसभा का चुनाव लड़ाया था। इसी तरह अन्य संगठन पदाधिकारियों को भी चुनाव मैदान में उतारा था। इसका नुकसान यह हुआ कि इन संगठनों की पूरी टीम अपने नेताओं के चुनाव प्रचार तक सीमित हो गई। अब चूंकि पूरा जोर संगठन को सशक्त बनाने पर है, इसलिए राजनीतिक मामलों की समिति में जब यह विषय आया तो राहुल गांधी समेत सभी वरिष्ठनेता इस पर एक मत थे कि संगठन का काम करने वाले पदाधिकारियों को यदि चुनाव लड़ाया जाना है, तो उन्हें पद छोड़ना होगा। दरअसल, पार्टी ऐसे लोगों को संगठन की कमान सौंपना चाहती है, जो पूरा समय दे सकें। चुनाव लड़ने के इच्छुक पदाधिकारी न तो संगठन को पूरा समय दे पाते हैं और न ही चुनाव की तैयारी ही कर पाते हैं।

संगठन प्रथम की है अवधारणा–पार्टी पदाधिकारी संजय कामले का कहना है कि संगठन प्रथम की अवधारणा को लेकर काम चल रहा है। हर स्तर पर सभी विषयों को लेकर चर्चा हो रही है। कुछ पर सहमति बन चुकी है और उसके मापदंड जल्द निर्धारित हो जाएंगे। इसमें एक विषय संगठन पदाधिकारियों को चुनाव लड़ाने से संबंधित भी है।

प्रत्येक विधानसभा का अलग होगा चुनाव प्रबंधन प्रभारी–प्रदेश में वर्ष 2027 से विभिन्न तरह के चुनाव प्रारंभ हो जाएंगे। सबसे पहले नगरीय निकायों के चुनाव होंगे, जो विधानसभा चुनाव की तैयारी के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण होंगे। इसे देखते हुए कांग्रेस ने तय किया है कि प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र के लिए चुनाव प्रबंधन प्रभारी नियुक्त किया जाएगा। इन्हें प्रबंधन से जुड़े विषयों को लेकर विशेषज्ञों से प्रशिक्षण भी दिलाया जाएगा।

लोकमाता मां अहिल्याबाई होलकर का जन्म शताब्दी वर्ष मनाया

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। विश्व धूम्रपान निषेधक दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया साथ ही मां अहिल्याबाई के जीवन पर व्याख्यान - मां अहिल्याबाई जीवन दर्शन पर मार्गदर्शन कवि नंदकिशोर जी राठौर, सलोनी त्रिवेदी, विश्व धूम्रपान निषेधक दिवस व्याख्यान - धूम्रपान और तंबाकू सेवन के दुष्परिणाम पर जागरूकता अभियान कार्यक्रम गत दिवस मेडी पांईट मेडिकल, गोल चौराहा, मन्दसौर पर आयोजित किया गया ! कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि कवि नंदकिशोर जी राठौर, मनी जी शामगढ़ वाला, प्रांतीय अध्यक्ष घनश्याम जी पोरवाल, मैजर उषा जी कुमावत शाखा अध्यक्ष डॉ .आशीष जी अग्रवाल द्वारा मां अहिल्याबाई के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलनकर किया गया। स्वागत उद्बोधन एवं कार्यक्रम की रूपरेखा जगदीश काला शाखा संस्कार प्रमुख, नरेंद्र कुमार त्रिवेदी प्रांतीय संस्कार प्रमुख द्वारा प्रस्तुत की गई।

मां अहिल्याबाई होलकर के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग कु. मान्यता सेनी, सलोनी जी त्रिवेदी द्वारा सुनाए गए। मनी शामगढ़ वाला ने दोहे सुनाए और जीवन दर्शन उनकी अच्छाई और न्याय व्यवस्था की बातें बताई। राठौर.ने कुशल प्रशासन और उनके जीवन के कई प्रसंगों को साझा किया जैसे मंदिरों का निर्माण, आड़ा बाज़ार क्यों कहा गया। आपने बताया कि जितने भी मंदिरों का निर्माण और जीर्णोद्धार किया स्वयं के खर्चे से करवाया आदि। अतिथिगण का स्वागत भारत विकास परिषद के सभी उपस्थित पदाधिकारियों द्वारा किया गया। इस अवसर पर धुम्रपान निषेधक दिवस पेम्पलेट का वितरण किया गया। कार्यक्रम मे एडवोकेट देवेन्द्र जी मरच्या, अजय जी शर्मा, सुभाष जी गुप्ता, डॉ.नवीन जी चौधरी, पंकज जी गुप्ता, राकेश जी घाटिया, चेतन सोनी, लता सैनी, समीर खान, दुर्गा देवी आदि उपस्थित रहे।

गुरु पूर्णिमा महोत्सव पुष्कर जी में

मंदसौर, 25 मार्च गुरु एक्सप्रेस। सुवासरा प्रति वर्ष अनुसार इस वर्ष भी राजस्थान के प्रसिद्ध अंतराष्ट्रीय संत श्री डॉ. कृष्णानंद जी महाराज अजमेर राजस्थान के द्वारा सभी गुरु भक्तों को इन समस्त समाचार पत्रों के माध्यम से अवगत करवाया जाता है कि दिनांक 09, 10 जुलाई 2025 तारीख को गुरुपूर्णिमा का महोत्सव राजस्थान की पावन धरा ब्रह्मा की नगरी पुष्कर जी (राजस्थान) में मनाया जा रहा है। समस्त गुरु भक्तों से अपील की जाती है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर गुरु पूर्णिमा महोत्सव में अपनी सहभागिता रखें। वही इस पुण्य का लाभ लेने अधिक से अधिक की संख्या में पुष्कर पहुंचे। उक्त आशय की जानकारी समाजसेवी एवं पत्रकार पंकज बैरागी ने एक प्रेस नोट के माध्यम से दी।

बहू ने सास को पीटा

पिपलियामंडी, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। बहू ने सास को पीटा, पुलिस ने केस दर्ज किया। एरा निवासी देउबाई धाकड ने नाहरगढ़ थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि गाय का दूध निकालने के विवाद में बहू कारीबाई ने गाली-गलौज की व लकडी से मारा, जिससे चोंटे आई। पुलिस ने कारीबाई पर केस दर्ज किया।

पोरवाल स्पोर्ट्स क्लब द्वारा नाईट वालीबाल टूर्नमिंट का शुभारंभ

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। दशपुर बीसा पोरवाल स्पोर्ट्स क्लब द्वारा आयोजित दो दिवसीय नाईट वॉलीबॉल टूर्नामेंट बीसा पोरवाल समाज के पुरुषों के लिए आयोजित किया गया जा रहा है। टूर्नामेंट में बीसा पोरवाल समाज की चार टीमें हिस्सा ले रही है

टूर्नामेंट के प्रथम दिन उद्घाटन हेतु मुख्य अतिथि के रूप में कॉलेज जनभागीदारी समिति अध्यक्ष श्री नरेश चन्दवानी, पूर्व पार्षद रामेश्वर मकवाना, बीसा पोरवाल समाज अध्यक्ष श्री लोकेन्द्र जैन, बीसा पोरवाल समाज सचिव पवन जैन, बीसा पोरवाल समाज कोषाध्यक्ष पिंकेश जरक, नेम कुमार पोरवाल (पूर्व पार्षद), बीसा पोरवाल सोश्यल ग्रुप अध्यक्ष श्री मयंक जैन, श्रीमान सुरेंद्र सोलंकी एंव श्री वैभव जैन (मंडी व्यापारी) उपस्थित थे। टूर्नामेंट का शुभारम्भ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। राष्ट्रगान के पश्चात मैच की शुरुआत की गयी। ग्राउंड में दशपुर बीसा पोरवाल स्पोर्ट्स क्लब मार्गदर्शक नरेंद्र जैन (अन्ना भईया), संरक्षक शैलेश जैन, संयोजक नितिन रिछावरा, अध्यक्ष शुभम पोरवाल (नंदावता वाला), सचिव संयम जैन (भाऊगढ़ वाला), उपाध्यक्ष पियूष जैन (नाहरगढ़ वाला) एवं विशाल जैन (अफजलपुर वाला), कोषाध्यक्ष सौरभ पोरवाल, सहसचिव आयुष जैन, प्रवक्ता नितेश जैन और कार्यकारिणी ग्रुप के सभी सदस्य मौजूद थे। टूर्नामेंट की सम्पूर्ण व्यवस्था देखने की लिए स्पोर्ट्स क्लब द्वारा कपिल जैन, सीए आशीष जैन, आयुष जैन एवं सीए नयन जैन को प्रोजेक्टस चेयरमैन बनाया गया। यह टूर्नामेंट कॉलेज ग्राउंड परिसर में स्थित वॉलीबॉल कोर्ट मे कोच अभिषेक सेठिया एवं उनकी टीम की उपस्थिति में आयोजित किया जा रहा है।

प्रथम दिन चार मैच खेले गये, प्रथम मैच अंशुल के महारथी एवं राज के जांबाज के बीच खेला गया और प्रथम मैच के विजेता अंशुल के महारथी रहे। द्वितीय मैच सौरभ के शूरवीर और ईशान के योद्धा के बीच खेला गया और द्वितीय मैच के विजेता ईशान के योद्धा रहे। तृतीय मैच ईशान के योद्धा और अंशुल के महारथी के बीच खेला गया और तृतीय मैच के विजेता ईशान के योद्धा रहे। चतुर्थ मैच सौरभ के शूरवीर एंव राज के जांबाज के बीच खेला गया जिसके विजेता सौरभ के शूरवीर रहे। दूसरे दिन दो लीग मैच रहेंगे, तत्पश्चात स्कोर के हिसाब से दो टीम जो अव्वल रहेगी उन दोनों टीमो के बीच फाइनल मैच खेला जायेगा। विजेता और उप विजेता दोनों टीमो को ट्रॉफी दी जाएगी और दोनों टीम के सभी खिलाड़ियों को गोल्ड और सिल्वर मैडल भी दिए जायेंगे।

युवक को पीटा

पिपलियामंडी, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। युवक से मारपीट के मामले में पुलिस ने केस दर्ज किया। लिम्बावास निवासी रोहित पिता नागूलाल नायक ने नारायणगढ़ थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि पुराने विवाद को लेकर निवास पिता चांदमल नायक ने घर पर आकर गाली-गलौज की व मारपीट की, धक्का दिया जिससे में लोहे की जाली पर गिर गया। मुझे हाथ, कंधे व कमर पर चोंट आई। पुलिस ने आरोपी पर केस दर्ज किया।

खेलों में सफलता के लिये मेहनत, एकाग्रता व समर्पण आवश्यक-डा. भाटी

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। खेलों में सफलता के लिये मेहनत, एकाग्रता व समर्पण आवश्यक है। भोपाल नोबल्स विश्वविद्यालय संस्थान उदयपुर के खेल प्रशाल में चल रहे क्रिकेट कोचिंग कैंप में म.प्र. क्रिकेट एसोसिएशन के आजीवन सदस्य एवं बी.सी.सी.आई. के एंटी करप्शन ऑफिसर डॉ. शिव सिंह भाटी ने उक्त विचार व्यक्त किये। आपने बी.एन संस्थान द्वारा खेलों के लिये उपलब्ध कराई गई आवश्यक सुविधाओं की प्रशंसा की।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार श्री निरंजन नारायणसिंह खोड़ द्वारा बताया गया कि संस्थान में खिलाड़ियों के लिये क्रिकेट, बास्केटबाल, फुटबाल, बालीबाल, शुटिंग, स्वीमिंग पूल आदि एक ही स्थान उपलब्ध कराये गये हैं, संस्थान आवश्यक सुविधायें उपलब्ध कराने के लिये कटिबंद्ध है। कोचिंग कैम्प के प्रभारी कोच रणजी ट्राफी खिलाड़ी और बीसीसीआई लेवल दो श्री चन्द्रपालसिंह चुण्डावत द्वारा बताया गया कि क्रिकेट शिविर में 250 खिलाड़ी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है। आपने संस्था द्वारा उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं के लिये आभार व्यक्त किया। उक्त अवसर पर डॉ. जी.पी.सिंह झाला, खिलाड़ी व अभिभावक आदि उपस्थित थे।

टक्कर से कार क्षतिग्रस्त

पिपलियामंडी, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। ट्रक की टक्कर से कार क्षतिग्रस्त हो गई। पुलिस ने केस दर्ज किया। रतलाम निवासी रेलवे सीटीआई विजयपालसिंह राजपूत ने पिपलिया थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि चित्तोड़ से रतलाम की ओर जा रहा था। पिपलियामंडी में बरखेड़ापंथ ब्रिज के पास मेरी कार (एमपी 43 सीए 3645) को पीछे से आ रही ट्रक (आरजे 09 जीई 0953) ने टक्कर मार दी। जिससे कार क्षतिग्रस्त हो गई। पुलिस ने ट्रक ड्राइवर पर केस दर्ज किया।

विद्या भारती मालवा की योजना सरस्वती शिशु विद्या मंदिर सीबीएसई नीमच में नवीन आचार्य विकास वर्ग का उद्‌घाटन सत्र प्रारंभ

नीमच, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। नवीन आचार्य विकास वर्ग के उद्घाटन सत्र में अतिथियों द्वारा विद्या भारती का ध्वजारोहणकर मां सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन सत्र का प्रारंभ किया गया उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि वैभव ओझा (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नीमच जिला बौद्धिक प्रमुख) एवं विकास वर्ग के वर्ग संयोजक बाबूलाल अहीर (प्राचार्य भानपुरा) उपस्थित थे। अतिथि द्वारा अपने पाथेय में पंचपरिवर्तन विषय के बारे में बताया गया जिसमें व्यक्तित्व विकास एवं सामाजिक समरसता के बारे में बताया गया।अतिथि ने अपने पाथेय में पांच परिवर्तन को बताते हुए बताया कि पांच परिवर्तन राष्ट्र की धरोहर है और यही राष्ट्र निर्माण में पांच परिवर्तन बहुत बड़ा महत्व रखते है हम आज इन पांच परिवर्तनों के माध्यम से राष्ट्र को जग सिर मोर बनाए सामाजिक समरसता हमारा ऐसा पांच परिवर्तन का एक भाग है जिसमें हमें समाज के समस्त व्यक्तियों के साथ रहकर राष्ट्र धर्म को मजबूत करना है जब समाज की एकता अखंडता रहेगी तो हमारा राष्ट्रीय एकता के बंधन में बंधता हुआ जग सिर मोर बनेगा समाज में किसी से ना भेदभाव करते हुए ना उन सभी को एक साथ लेकर चलते हैं इसी सिद्धांत पर हमारा कुटुंब हमारा परिवार आज के युग में कुटुब का महत्व धीरे-धीरे खत्म होता जा रहा है इसी कुटुंब के महत्व को समझाते हुए कहा कि कुटुंब परिवार की धरोहर होती है और कुटुंब से ही समाज एक बड़ा स्वरूप लेता है और समाज राष्ट्र का एक बड़ा स्वरूप लेता है हमारा परिवार हिल मिलकर रहे और समस्त लोग सारे कार्यों र्को एकता के बंधन में करें यही हमारे कुटुंब का महत्व है पांच परिवर्तन में हमारा पर्यावरण हमारे राष्ट्र की सबसे बड़ी मातृभूमि की धरोहर पर्यावरण यदि हमारी प्राकृतिक वस्तुओं का हास नहीं होगा साथ ही हम एक जिम्मेदार नागरिक है जो इस पर्यावरण की रक्षा के लिए बने हैं इसलिए हमें इस प्रकृति की चिंता भी करनी है और इस प्रकृति को बचाना इसलिए प्रकृति को नुकसान ना हो इस प्रकार के कार्यों को करते हुए हमें अधिक से अधिक वृक्ष और ऐसी वस्तुओं का उपयोग कम करें जो प्रकृति को नुकसान पहुंचाती है हमारी प्रकृति अगर जीवित रही तो इस राष्ट्र की धरोहर को हम जग सिर मोर बना सकते हैं स्व का बोध हम क्या है और हमें हमारी किन बातों का ध्यान रखते हुए इस राष्ट्र के हित को देखते हुए हमें हमारे स्व का बोध होना चाहिए हमारी भाषा हमारी भूषा हमारा भोजन और हमारा भ्रमण यह हमें हमारे स्व का बोध करवाते हैं हमारी भाषा क्या है हम हमारी राष्ट्रभाषा का प्रयोग अधिक करें हां हम सीखने के क्षेत्र में अंग्रेजी भाषा भी सीख सकते हैं लेकिन हमारी मातृभाषा का हमें हमेशा सम्मान करना चाहिए और यहां तक हम बड़े-बड़े प्रतिष्ठान कार्यालय में हमारे हस्ताक्षर हैं वह भाषा स्वरूप में हो हमारा भूषा हमारा वस्त्र हमारा पहनावा यह कैसा हो यह हमारे संस्कृति ओर मर्यादा के स्वरूप में होना चाहिए हमारा भ्रमण आज हम के घूमने के उद्देश्य से जाते हैं जबकि हमारे देश में ऐसी धरोहर हैं जो हमारी सांस्कृतिक गौरव गाथाओं की याद दिलाते हैं हमारा भृमण भी ऐसा हो जो हमे गौरवान्वित करे हमारे देश की पुराने इतिहास से हमको परिचित करे जिसको हम युगों युगों से याद रख सके। हमारा भोजन कैसा हो सात्विक हो भोजन परिवार के साथ हो यह हमें अपने स्व बोध होना चाहिए हमारा पांच कर्तव्य में हमारे नागरिक कर्तव्य क्या होने चाहिए हमारा कर्तव्य बनता है कि राष्ट्र की हर संपत्ति हमारी संपत्ति है राष्ट्र की हर धरोहर हमारी धरोहर है इसकी रक्षा करना हमारा कार्य है हमारा कर्तव्य बनता है कि राष्ट्र के जितने भी नियम जो राष्ट्र की हित के लिए है वह नियमों का हमें भी पालन करना चाहिए और हमारे राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को उसका पालन करवाना चाहिए यही पांच परिवर्तन सिद्धांत हमारे जीवन में हमारे परिवर्तों र्को लाते हैं और ऐसे संकल्प को लेकर हम इन पांच परिवर्तन सिद्धांत की ओर चलते हैं तो आने वाले समय में हम हमारे राष्ट्र जगत सिर मोर बने सके। उद्घाटन सत्र में संचालन वर्ग के बौद्धिक प्रमुख प्रवीण पुरोहित ने किया। अतिथि परिचय वर्ग के संयोजक बाबुलाल अहीर द्वारा करवाया गया।

भोपाल में विश्व सागर दिवस के अवसर पर एनसीसी के एनएसएस विंग के छात्रों द्वारा बोट क्लब पर नुक्कड़ नाटक का आयोजन कर सैलानियों को पर्यावरण एवं जल स्त्रोतों के संरक्षण का संदेश दिया।

नदियों के उदगमों को करें संरक्षित, इनमें होती है भरपूर ऊर्जा, अजनाल नदी के उद्गम स्थल पर पूजा-अर्चना कर किया पौध-रोपण

भोपाल नप्र। पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने शनिवार को रहटगांव तहसील के ग्राम खूमी में स्थित अजनाल नदी के उद्गम स्थल पर पहुंचकर विधिवत पूजा-अर्चना की। मंत्री श्री पटेल ने अजनाल नदी के उद्गम स्थल पर वन विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में जन-प्रतिनिधियों के साथ पीपल, बरगद एवं नीम के पौधे लगाए। उन्होंने अधिकारियों को नदी के उद्गम स्थल के आसपास और अधिक पौधे लगाने, तथा लगाए गए पौधों को संरक्षित करने के निर्देश दिए। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि मध्यप्रदेश में सबसे अधिक नदियों के उद्गम स्थल हैं। हमारे प्रदेश को नदियों का मायका कहा जाता है। हमें नदियों के उद्गम स्थलों को संरक्षित करना चाहिए, नदियों के उद्गम स्थल पर भरपूर ऊर्जा होती है। उन्होंने कहा कि नदियों के आसपास ट्यूबवेल उत्खनन तथा वृक्षों की कटाई के कारण कई नदियां नष्ट होने के कगार पर हैं। नदियों के स्रोतों को जिंदा रखना जरूरी है। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि हम नदियों के स्रोतों को नष्ट कर रहे हैं और नहरों का पानी नदियों में डालकर खुश हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश में भरपूर नदियां होने के बावजूद यहां का जल-स्तर घटना चिंता का विषय है। उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता नदियों के संरक्षण की है। जरूरी है कि नदियों के किनारे वृक्ष लगाएं। मंत्री श्री पटेल ने प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अधिकारियों को निर्देश दिए कि बड़वानी से खूमी रोड के साइड शोल्डर भरवाएं।

शिवना शुद्धिकरण में रविवार को पहुंचे बड़ी संख्या में श्रमदानी, निकाली जलकुंभी व गाद

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। विधायक श्री विपिन जैन के नेतृत्व में चल रहे शिवना शुद्धिकरण अभियान के अंतर्गत रविवार, 8 जून को बडी संख्या में श्रमदान करने सामाजिक संगठन, ग्रामीणजन, आमजन पहुंचे। अभियान के 39वें दिन 16 ट्राली जलकुंभी व गाद शिवना नदी से निकाली गई।

विधायक श्री जैन ने कहा कि तपती गर्मी में भी आमजन श्रमदान करने आ रहे है। यह उनकी शिवना के प्रति श्रद्धा एवं प्रेम को दर्शाता है। सभी की मंशा है कि शिवना नदी अपने पुराने स्वरूप में आये, साफ व स्वच्छ हो तथा इसका सौंदर्यीकरण हो। इसके लिये सभी के प्रयास जल्द ही सफल होंगे। रविवार को श्रमदान करने वालों में विधायक विपिन जैन, वरिष्ठपत्रकार घनश्याम बटवाल, सुरेश भावसार, जनता कॉलोनी मित्र मण्डल से प्रीतम पंचोली, आरती पंचोली, श्याम सोनी, नवीन सोपुरकर, प्रताप सिंह, जसवंतसिंह, दीपेश बैरागी, महेश रेठा, राजेश पाठक, अजय मारू, विजय मारू, अनिल नीमा, प्रदीप जोशी, निखलेश मालवीय, विनोद सोनी, अपाक्स सफाई प्रकोष्ठवाल्मीकि समाज से हेमा कंडारे, गीता तंवर, रंजीत डागर, पारस जादू, जया डागर, हीना चनाल, कला सोनवाल, गुड्डी कोटीयाना, समाजसेवी में मनीष भावसार, महेश दुबे, नमन पालीवाल, हेमराज खाबिया, विजय आनंद, राकेश जैन, रमेश सोनी, हरजीतसिंह, सूरजसिंह सिसौदिया, अभिषेक तिवारी, हेमंत मेहता, सुनील मिण्डा, पलक कुमावत, रामचन्द्र मालवीय टीआई, रमेश सोनी, धारियाखेडी गांव से सुरेश पाटीदार, घनश्याम पाटीदार, अयुब शेख, बाबू सूर्यवंशी, रमेश पाटीदार, परशुराम पाटीदार, महिला नेत्रीयो में इष्टा भाचावत, अनिता भदौरिया, राखी सत्रावाला, गीताली पोरवाल, दीपाली पोरवाल, शैली पोरवाल, वर्षा दोशरिया, पलक कुमावत, निवेदिता कुमावत, कांग्रेस नेता मंजीतसिंह टुटेजा, राजेन्द्र छाजेड,सुरेन्द्र कुमावत,विकास दशोरा, राजनारायण लाड, राजेश फरक्या, राजेन्द्र सेठिया,मनोहर नाहटा, अजय बसेर, राजेश चौधरी, शैलेन्द्र गोस्वामी, गणपत कुमावत, मुकेश पाटीदार, मूलचंद पाटीदार, बंटू फरक्या, ऋषिराज लाड, गोपाल बंजारा, राजा भाई,अक्षय सेठिया, भाविक संचेती, सोहनलाल धाकड़, योगेन्द्र गोड, राकेश सेन, मोहनपुरी गोस्वामी, दुर्गेश चंदेल, मुर्तुजा घड़ियाली, महेश गुप्ता सहित बडी संख्या में आमजन उपस्थित रहे।

हिंदूओं को हिन्दूत्व से जोड़ने का काम राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने किया है-सोनी

30 प्रशिक्षार्थी वर्ग में सीख रहें शारीरिक एवं शैक्षिक कौशल विकास

नगरी, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। नगर के सरस्वती शिशु मंदिर में ग्राम भारती शिक्षा समिति द्वारा आयोजित सात दिवसीय नवीन आचार्य प्रशिक्षण वर्ग में छठवें दिन प्रशिक्षार्थियों ने भविष्य में उनके द्वारा स्कूलों में संचालित की जानें वाली शारीरिक शिक्षा एवं शैक्षणिक कार्यों के दोरान क्रियान्वित कौशलों के विकास से संबंधित गतिविधियों का प्रशिक्षण प्राप्त कियों वंदना सत्र में अतिथि के रूप में जिला समिति सदस्य मांगीलाल कुमावत, जिला प्रमुख महेश विश्वकर्मा, वर्ग संयोजक मयूर सोनी, एवं प्रधानाध्यापक मोहनलाल उपस्थित रहें अतिथियों का परिचय प्रशिक्षार्थी पूजा कुंवर एवं स्वागत प्रशिक्षार्थी आशा, ज्योति, सोनिया गुप्ता एवं आंचल शर्मा ने कियों अतिथि उद्बोधन सत्र में उपस्थित प्रशिक्षार्थियों को संबोधित करते हुए वर्ग संयोजक मयूर सोनी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना, उद्देश्यों एवं संघ द्वारा क्रियान्वित कार्यों के संबंध में जानकारी

दी गई। श्री सोनी ने कहा कि संघ का प्रमुख कार्य हिंदूओं को हिन्दूत्व से जोडने का हैं ।एक छोटे से ब्राह्मण परिवार में जन्म लेने वाले डां. केशवराम बलिराम हेडगेवार ने 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना कीं संघ का भाव हमेशा स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग एवं छूआछूत की भावना से दूर रहकर राष्ट्रीय हिंदूत्व की भावना को आत्मसात करने का रहा हैं ं स्वयंसेवक हमेशा कुटूंब बनाकर चलने के साथ ही पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन पर ध्यान देते हैं पंच प्राण का उपयोग करते हुए नागरिक अनुशासन की भावना का विकास संघ की शाखाओं में किया जाता रहा है। कार्यक्रम का संचालन उर्मिला धाकड ने किया एवं अमृत वचन आचार्य सूरज ने एवं एकल गीत आशा ने प्रस्तुत किया।

पंचपदी शिक्षण पद्दित की थीम पर होगा कल समापन –नवीन आचार्य प्रशिक्षण वर्ग के प्रचार प्रसार प्रमुख कुंदन कुमावत ने जानकारी देते हुए बताया कि मंदसौर जिला ग्रामीण शिक्षा समिति द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय नवीन आचार्य शिक्षण वर्ग का समापन आज सोमवार सायं 4 बजे होगा। समापन समारोह में ग्राम भारती मालवा प्रान्त के पदाधिकारी के साथ ही जिला समिति के पदाधिकारी एवं सम्पूर्ण मंदसौर जिले के 78 विद्यालय के संस्था प्रधानों की उपस्थिति रहेगी। समापन समारोह में नवीन शिक्षा नीति 2020 के आधार पर शिक्षण में नवाचार के प्रयोग जो शिक्षार्थी ने सीखे है, उन्हें प्रदर्शित करेंगे साथ ही जिला बैठक का आयोजन भी होगों जिला बैठक में शिक्षा सत्र 2025-26 की नवीन योजनाओं के विभिन्न बिंदुओं पर भी चर्चा की जायेगीं समापन कार्यक्रम में नगरी नगर के अभिभावकों , नागरिकों के साथ ही और आसपास के कार्यकर्ताओं की भी उपस्थिति रहेगी।

अभा मालवीय बलाई समाज की बैठक सम्पन्न

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। अभा मालवीय बलाई समाज जिला मंदसौर की बैठक दिनांक 7 जून शनिवार को तेलिया तालाब बगीचा मंदसौर में जिलाध्यक्ष श्री रामचंद्र मालवीय गांधीनगर की अध्यक्षता एवं वरिष्ठ समाजसेवी रामचंद्र मालवीय खजुरी मांडा के विशेष आतिथ्य में संपन्न हुई। बैठक में उपस्थित समाज जनों द्वारा निर्णय लिया गया है कि अखिल भारतीय मालवीय बलाई समाज महासंघ एवं सद्गुरु कबीर सेवा समिति के तत्वाधान में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी विश्व वंदनीय सदगुरु कबीर साहब के प्रकट उत्सव के उपलक्ष्य में दिनांक 22 जून रविवार 2025 को श्री कुशभाऊठाकरे ऑडिटोरियम राजीव गांधी महाविद्यालय परिसर मंदसौर में वर्ष 2024 वर्ष 2025 के वार्षिक परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं का प्रतिभा सम्मान समारोह एवं युवक युवती पारिवारिक परिचय सामाजिक सद्भावना सम्मेलन के साथ समाज के सेवानिवृत्ति अधिकारीयों ,कर्मचारियों के साथ उत्कृष्ट सेवा कार्य करने वाली महिलाओं का सम्मान समारोह आयोजित किया जायेगा। कार्यक्रम की तैयारीयों को लेकर विभिन्न समाज जनों के सहयोग से जवाबदारी दी गई हैं। कार्यक्रम में सभी समाज जनों के साथ जिले भर के सभी जनप्रतिनिधियों को अतिथि के रूप में आमंत्रित किया जाएगा। मंदसौर जिला मुख्यालय पर छात्रावास मांगलिक भवन रिजॉर्ट निर्माण को लेकर भी आम सहमति बनाकर युद्ध स्तर पर कार्य प्रारंभ करने हेतु सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया। जिसको लेकर दिनांक 9 जून शाम 6 बजे समाज जनों की एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन भी तेलिया तालाब मंदसौर पर किया जाएगा। दिनांक 22 जून रविवार को भव्य शोभायात्रा सुबह 9 से

भारत रत्न, संविधान निर्माता बाबा साहब भीमराव अंबेडकर चौराहे से प्रारंभ होकर शहिद उधम सिंह चौराहा, महात्मा गांधी चौराहा, लोह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल चौराहा एवं महाराणा प्रताप चौराहा से होती हुई श्री कुशाभाऊ ठाकरे ऑडिटोरियम मंदसौर में समापन होगी। कार्यक्रम में अधिक से अधिक समाज जनों एवं धर्म प्रेमी को सम्मिलित करने के लिए आयोजन समिति के द्वारा प्रत्येक गांव-गांव में आमंत्रण पत्र पहुंचाये जाएंगे। कार्यक्रम में मुख्य रूप से अखिल भारतीय बलाई महासंघ राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मनोज परमार इंदौर, मुख्य भजन गायक श्री अरुण गोयल अंतर्राष्ट्रीय कबीर भजन गायक इंदौर, मुख्य संत प्रवचन संत श्री गुरु रमन साहब कबीर आश्रम बाराबंकी, उत्तर प्रदेश के साथ अनेक संत, महंत, साध्वी जन उपस्थित होकर समाज जनों को मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। बैठक में मुख्य रूप से रामचंद्र मालवीय, सतीश मालवीय,जगदीश मालवीय ,अशोक खिंची ,ईश्वरलाल आटेला, अशोक मालवीय,राकेश डांगी रामगोपाल चौहान, गोविंदराम मालवीय, नागुलाल चौहान, राधेश्याम देवडा, अर्जुन मालवीय, रामरतन आटेला, मुकेश मालवीय, गोपाल राठौर आदि समाज जन उपस्थित थें। बैठक का संचालन सतीश मालवीय द्वारा किया गया और अंत में आभार प्रदर्शन गोविंदराम मालवीय द्वारा व्यक्त किया गया।

151 दीप प्रज्वलित कर मनाया बावड़ी उत्सव

मध्यप्रदेश जनअभियान परिषद ने कयामपुर में भजन संध्या कर की गंगा आरती

कयामपुर/सीतामऊ, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। मध्यप्रदेश जनअभियान परिषद द्वारा जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत प्रदेश के प्रत्येक विकासखंड में बावडी उत्सव कार्यक्रम आयोजित किया गया है। जिसमें मंदसौर जिले के प्रत्येक विकासखंड में भी बावडी उत्सव कार्यक्रम आयोजित किये गये। सीतामऊ विकासखण्ड सेक्टर क्रमांक 1 कयामपुर में प्रसिद्ध ओखाबावजी की प्राचीन बावडी पर 151 दीप प्रज्वलित कर भजन संध्या का आयोजन किया गया। भजन संध्या के पश्चात बावडी उत्सव को लेकर गंगा आरती की गई। वावडी उत्सव में ग्राम पंचायत कयामपुर के सरपंच जगदीश माली (सरकार), आंचलिक पत्रकार संघ के जिला अध्यक्ष तुलसीराम राठौड, शिक्षक दुर्गाशंकर शर्मा, निर्भयराम प्रजापत,मुकेश कुमार गोड, डा.गोविंद सोनी,विकासखंड समन्वयक नारायणसिंह निनामा, परामर्शदाता हरिओम गंधर्व ,हेमंत गौड, चरणसिंह चौहान, मंगला बैरागी, सत्यनारायण प्रजापत, नवांकुर संस्था जन जागरण विकास समिति कयामपुर के अध्यक्ष दिलीप भटनागर,नवांकुर संस्था नाटाराम प्रगतिशील विकास समिति के कार्यकर्ता धारणा गंधर्व,खुशी समृद्धी विकास ओर सामाजिक संस्था के अध्यक्ष रजनीश शर्मा,मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम के सामाजिक कार्यकर्ता निशा गोड,राहुल धनगर, किशन विश्वकर्मा ने गंगा आरती की।सामाजिक कार्यकर्ता एस.एन.गवरिया,मदन धनगर, विनोद प्रजापत,राहुल धनगर, जयसिंह कुशवाह बाबूलाल माली,हरिओम विश्वकर्मा, विनोद मेघवाल सहित माता बहने एवं सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन हरिओम गंधर्व ने किया। आभार दिलीप भटनागर ने माना। कार्यक्रम का शुभारंभ सर्वप्रथम बावडी पर दीप प्रज्वलित एवं पुष्माला पहनाकर किया गया। साथ ही प्राचीन बावडी के आसपास 11 से अधिक भैरुजी का स्थान है जिन पर पूजा अर्चना कर कार्यक्रम का शुभारम किया गया।

दो पक्षों में मारपीट, क्रास प्रकरण दर्ज

पिपलियामंडी, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। मारपीट के मामले में दोनों पक्षों पर क्रास केस दर्ज किया। शांति विहार कॉलोनी निवासी राजू मेघवाल ने पिपलिया थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि मैं काचरिया चन्द्रावत ससुराल गया था। मैं अपने साले राजेश मेघवाल से बातचीत कर रहा था कि महेश बावरी बीच में बोल रहा था, मैंने मना किया तो महेश के साथ उसके भाई बबलू व पिता पूरन तीनों लट्ठ लेकर मारा, जिससे कमर व कंधे पर चोंटे आई, बीच-बचाव करने आई मेरी सास कलाबाई उर्फ रामकन्या के साथ भी आरोपियों ने मारपीट की, जिससे आंख के पास चोंट लगी। पुलिस ने तीनों पर केस दर्ज किया। इसी तरह महेश बावरी ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि मेरी दुकान पर राजू मेघवाल व उसका साला राजेश विवाद कर रहे थे, मैंने उन्हें घर जाने की बोला तो राजू ने गाली-गलौज की व लट्ठ की मारी, जिससे हाथ पर चोंट आई। पुलिस ने राजू के खिलाफ केस दर्ज किया।

पशुपालक डा. भीमराव आम्बेडकर कामधेनु योजना का लाभ उठावें

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। पशु पालन एवं डेयरी विभाग के उप सचांलक द्वारा बताया गया कि सभी वर्ग के किसान पशुपालक डॉ. भीमराव अम्बेडकर कामधेनु योजना में दुधारू पशुओं की डेयरी इकाई की स्थापना बैंक ऋण की सुविधा के साथ शासकीय अनुदान से कर सकते है। आवेदक की पात्रता हितग्राही मध्यप्रदेश राज्य का निवासी होना चाहिए। योजना सभी वर्ग के पशुपालकों के लिए है। हितग्राही को ऑनलाईन पोर्टल www.mpdah.gov.in के माध्यम से आवेदन करना होगा। हितग्राही के पास न्यूनतम 3.50 एकड कृषि भूमि होना आवश्यक है। योजनांतर्गत 25 दुधारू पशुओं की इर्का स्थापित की जाएगी। एक इकाई में समस्त गौवंश या समस्त भैंसवंश ही होगें। एक इकाई की समस्त गाय/भैंस एक ही प्रजाति की होगी।

योजना में भारतीय मूल की देशी गाय की नस्लों में साहिवाल, गिर, थारपारकर, रेड सिंधी, संकर नस्लो में एच.एफ.जर्सी, भैंसो में मुर्रा, भदावरी, सूरती, मेहसाना शामिल की जा सकेंगी। लाभार्थी को किसी शासकीय प्रशिक्षण संस्थान/महाविद्यालय/शासन द्वारा अधिकृत प्रशिक्षण संस्थान से प्रशिक्षण लेना अनिवार्य होगा। आवेदक को योजना की स्वीकृति हेतु प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र संलग्न करना अनिवार्य होगा। अनुदान राशि अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति श्रेणी के हितग्राहियों के लिए निर्धारित परियोजना लागत का 33 प्रतिशत तथा अन्य श्रेणी के हितग्राहियों के लिए निर्धारित परियोजना लागत का 25 प्रतिशत होगी। अधिक जानकारी के लिए पशुपालन विभाग मंदसौर से संपर्क करें।

ग्राहक पंचायत की बैठक संपन्न कोठारी बने अध्यक्ष, भाटिया बने सचिव

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत जिला मंदसौर की मासिक बैठक आज ग्राहक पंचायत के कार्यालय पर संपन्न हुई। जिसमें नए जिलाध्यक्ष की घोषणा हुई।

ग्राहक पंचायत संगठन का यह वर्ष निर्वाचन वर्ष चल रहा है इसके अंतर्गत सर्वप्रथम राष्ट्रीय कार्यकारिणी के चुनाव हुए, उसके पश्चात प्रांत कार्यकारिणी के पदाधिकारी का निर्वाचन हुआ। 18 मई को इंदौर में आयोजित प्रांत बैठक में जिला कार्यकारणी के दायित्व परिवर्तन को लेकर निर्देशित किया गया था। जिसके अंतर्गत प्रांत अध्यक्ष देवेंद्र दुवगे, प्रांत सचिव बहादुर सिंह राजपूत, प्रांत संगठन मंत्री मुकेश कौशल एवं मंदसौर जिला प्रभारी नितिन बिजापारी की सहमति से आज मंदसौर जिले के नए जिलाध्यक्ष के रूप में विजय कोठारी एवं जिला सचिव के पद पर आशीष भाटिया का मनोनयन किया गया। जिला स्तर की कार्यकारिणी का गठन मनोनीत अध्यक्ष व सचिव द्वारा जिले के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं से चर्चा कर आगामी समय में घोषणा की जावेगी। बैठक में उपस्थित कार्यकर्ताओं द्वारा नवनिर्वाचित अध्यक्ष व सचिव का पुष्पहार पहनाकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर ग्राहक पंचायत के मालवा प्रांत सह सचिव नवनीत शर्मा, उमराव सिंह जैन, वीरेंद्र चौहान, सुनील ठाकुर, विजय परदेसी, नीलेश सेन, भूपेंद्र बैरागी, सुधा कुर्मी उपस्थित थे। उक्त जानकारी जिला कार्यालय मंत्री नीलेश सेन द्वारा दी गई।

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के परिप्रेक्ष्य में 96 वां रक्तदान शिविर संपन्न

जोगीखेड़ा, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। भारतीय सेना के द्वारा ऑपरेशन सिंदूर के सफल होने पर संस्था ओर स्थानीय नागरिकों द्वारा सूर्यनगर (अफजलपुर) में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर लगाया गया जिसमें गांव के युवाओं के साथ कमलसिंह चंद्रावत (सेवा निवृत केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल) ने भी रक्तदान किया।

शिविर में 31 रक्तवीरो में से 29 युवाओ ने अपने जीवन का प्रथम रक्तदान किया और जिला चिकित्सालय मंदसौर की रक्त कोष टीम द्वारा रक्तसंग्रह कर संस्था को प्रशस्ति पत्र भेंट कर सभी रक्तवीरो का आभार जताया। रक्तदान शिविर सफल बनाने में राकेश गुर्जर (देव स्टूडियो) सूर्यनगर(अफजलपुर) ओर निखिल राव भाटरेवास का महत्वपूर्ण योगदान रहा चूकि गांव में ऐसा ही रक्तदान शिविर पुर्व में भी आयोजित किया गया था किन्तु युवाओं में जागरूकता की कमी ओर तरह तरह की भ्रांतियां होने के कारण 3 यूनिट ही रक्तदान हो पाया था, इनके द्वारा लोगों को जागरूक करने पर दूसरी बार में 31 यूनिट रक्तदान हुआ। ऑपरेशन सिंदूर के तहत रक्त दान शिविर में अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद इकाई मंदसौर के जिला अध्यक्ष मुकेश गुर्जर(सेवा निवृत भारतीयसेना), कमलसिंह चंद्रावत को संस्था द्वारा माला पहनाकर भारत माता तस्वीर भेंट कर सम्मान किया। रक्त दान शिविर में राधेश्याम डांगी सूर्यनगर (अफजलपुर) द्वारा पलंग व कूलर की व्यवस्था की गई एवं ठंडे पानी की व्यवस्था मनोर दास बैरागी द्वारा की गई शिविर में संस्था रक्त सेवा गौ सेवा फाउंडेशन रजि. मध्यप्रदेश के संस्थापक रक्तमित्र नागेश्वर मालवीय, जिला प्रभारी हितेश रायमलानी (भाहु), जिला अध्यक्ष पुष्कर पाटीदार,सदस्य निखिल राव, रामनारायण मालवीय(सेवा निवृत भारतीय सेना),ईश्वर मालवीय, राधाकिशन मालवीय आदि उपस्थित रहे। उक्त जानकारी संस्था रक्त सेवा गौ सेवा फाउंडेशन संस्थापक रक्तमित्र नागेश्वर मालवीय द्वारा दी गई।

पुलिस आरक्षक भर्ती प्रक्रिया में फर्जीवाड़ा कर परीक्षा देने वाले 22 अभ्यर्थियों के विरुद्ध 21 प्रकरण पंजीबद्ध

मुख्यमंत्री के निर्देशानुसार भर्ती प्रक्रिया में अनियमितता करने वाले अभ्यर्थियों पर की जा रही सख्त कार्रवाई

मंदसौर, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के निर्देशानुसार भर्ती प्रक्रिया में अनियमितता करने वाले अभ्यर्थियों पर सख्त कार्रवाही की जा रही है। इसी तारतम्य में आज पुलिस मुख्यालय के पुराने कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित प्रेस वार्ता में पुलिस महानिरीक्षक कानून व्यवस्था श्री अंशुमान सिंह ने बताया कि मध्यप्रदेश पुलिस आरक्षक जीडी तथा रेडियो में रिक्त पदों की पूर्ति के लिए वर्ष 2023 में जश्रिळशि लिखित परीक्षा मध्यप्रदेश कर्मचारी चयन मण्डल द्वारा आयोजित की गई थी, जिसमें 6,52,057 उम्मीदवारों ने भाग लिया था। प्रक्रिया के द्वितीय चरण में लिखित परीक्षा में सफल उम्मीदवार 55,220 अभ्यर्थियों की शारीरिक दक्षता परीक्षा चयन शाखा, मध्यप्रदेश पुलिस द्वारा 16 अक्टूबर से 20 नवम्बर के मध्य आयोजित की थी। संपूर्ण प्रक्रिया के उपरांत कुल 6423 अभ्यर्थी (5090 पुरूष एवं 1333 महिला) का चयन किया गया था।

द्वितीय चरण के शारीरिक दक्षता परीक्षा के दौरान नवम्बर 2024 में परीक्षा केन्द्र मुरैना में 05 अभ्यर्थियों द्वारा अपने स्थान पर किसी अन्य व्यक्तियों को परीक्षा में शामिल होने हेतु भेजा गया, जिन्हें संदिग्ध पाते हुए, परीक्षा में शामिल न कर उक्त उम्मीदवारों पर प्रकरण पंजीबद्ध किया जाकर विधिसम्मत कार्यवाही की गई थी। इस अनुभव के आधार पर पुलिस मुख्यालय भोपाल द्वारा अंतिम परिणाम जारी होने के उपरांत सभी सफल अभ्यर्थियों का चरित्र सत्यापन एवं नियुक्ति प्रक्रिया के दौरान उनकी आवंटित इकाईयों से बायोमेट्रिक एवं आधार हिस्ट्री की जांच पुन: कराये जाने हेतु दिनांक 21-04-2025 को निर्देश जारी किये गये। अभ्यर्थियों के दस्तावेजों की जांच में कुछ जिले में संदिग्ध रूप से भिन्नता पाये जाने पर बारीकी से जांच कराई गई, जिसमें यह पाया गया कि कुछ अभ्यर्थियों द्वारा लिखित परीक्षा के पूर्व अपना आधार कार्ड का बायोमेट्रिक संशोधन कराया गया था तथा लिखित परीक्षा के ठीक बाद उनके द्वारा पुन: आधार कार्ड का बायोमेट्रिक संशोधन कराया गया। ऐसे अभ्यर्थियों पर संदेह के आधार पर इनकी जांच कराई गई, जिसमें इनके हस्ताक्षर नूमना, हस्तलिपि, फिंगर प्रिंट लिये गये। साथ ही परीक्षा के दौरान इनके द्वारा दिये गये फिंगर प्रिंट, हस्तलिपि, के नमूने को प्राप्त कर उनकी जांच कराई गई। अभ्यर्थियों की वास्तविक लोकेशन के संबंध में तकनीकी रूप से भी जांच कराई गई, जिसमें भिन्नता पाये जाने पर प्रदेश के विभिन्न जिलों में प्रकरण पंजीबद्ध किये गये। अभी तक कुल 21 प्रकरण 22 अभ्यर्थियों के विरूद्ध पंजीबद्ध किये जा चुके है, जिसमें मुरैना में 07, शिवपुरी-06, श्योपुर-02 तथा इंदौर, दतिया, ग्वालियर, अलीराजपुर, राजगढ तथा शहडोल में 01-01 प्रकरण पंजीबद्ध किये गये हैं। विवेचना के दौरान यह तथ्य सामने आये हैं कि कुछ आधार कार्ड बेण्डरों द्वारा अतिरिक्त लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से अभ्यर्थियों के आधार कार्ड को बिना पूरी तरह जांच किये संसोधन के लिए अपने सिस्टम में अपलोड किया गया था। आरोपियों द्वारा इस प्रक्रिया का लाभ उठाते हुए अपराध कारित किया गया है। पुलिस मुख्यालय स्तर पर पुलिस महानिदेशक, मध्यप्रदेश के निर्देशन में चयन शाखा तथा अन्य शाखाओं के द्वारा इन सभी प्रकरणों में लगातार निगाह रखी जाकर मैदानी इकाईयों को आवश्यक मार्गदर्शन दिये जा रहे हैं। माननीय मुख्यमंत्री महोदय, मप्र शासन द्वारा इसमें सख्त से सख्त कार्यवाही किये जाने हेतु निर्देशित किया गया है।

मुख्यमंत्री ने पुलिस आरक्षक भर्ती-2023 में फर्जीवाड़े एवं अनियमितता पर सख्त कार्रवाई करने के दिए निर्देश–मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पुलिस आरक्षक भर्ती-2023 की प्रक्रिया में फर्जीवाड़े एवं अनियमितता की सूचना मिलने पर सख्त कार्रवाई करने के लिए निर्देशित किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इस प्रकार के आपराधिक कृत्य, जिनमें योग्य अभ्यर्थियों के साथ अन्याय होता है, मध्यप्रदेश में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पुलिस मुख्यालय द्वारा स्वत: संज्ञान लेते हुए सभी सफल अभ्यर्थियों के बायोमेट्रिक डाटा और आधार हिस्ट्री की सूक्ष्मता से जांच की जा रही है। प्रथम दृष्ट्या इम्परसोनेशन पाए जाने पर अभ्यर्थियों के विरुद्ध अपराध दर्ज कर कठोर कार्रवाई सुनिश्चित की गई है।

पिकअप से 04 गौवंश मुक्त कराए, 04 गिरफ्तार

पिपलियामंडी, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। पिकअप में 4 गौवंश क्रूररतापूर्वक भरकर ले जाने के मामले में चार आरोपियों को गिरफ्तार किया। नारायणगढ़ पुलिस ने पिपलियामंडी-मनासा मार्ग पर नारायणगढ़ में हरिशंकर यादव के खेत के सामने पंचर खडी पिकअप की तलाशी ली तो उसमें 4 गौवंश क्रूररतापूर्वक भरे होना पाए। पुलिस ने पिकपअप चालक झाबुआ जिले के कल्याणपुरा थाना क्षेत्र के आमली पठान निवासी जामसिंह पिता वरसिंह कटारा, राकेश पिता दल्लू कटारा, मुकेश पिता धुमा मुनिया, इंदरसिंह पिता गुलसिंह कटारा को गिरफ्तार कर पिकअप जब्त की व गौवंश को गौशाला भिजवाया।

मारपीट, पिता-पुत्र पर प्रकरण दर्ज

पिपलियामंडी, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। मारपीट के मामले में पिता-पुत्र पर केस दर्ज हुआ। दौबडा निवासी ईश्वरलाल पिता नाथूलाल मीणा ने बूढा चौकी पर पर शिकायत दर्ज कराई कि मेरी दुकान पर अंकल का लड़का गोर्धन व सुमित मीणा झगड़ा कर रहे थे, मैंने मना किया तो सुमित के साथ ही उसके पिता गोर्धनलाल मीणा ने मेरे साथ लात-घुसों व लकडी से पीटा, जिससे सिर व हाथ में चोंट आई। मेरी बाइक को भी नुकसान पहुंचाया। पुलिस ने पिता-पुत्र पर केस दर्ज किया।

दिव्यांग प्रमाण पत्र बनाने परीक्षण शिविर 11 को जावद में

नीमच, 08 जून गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर श्री हिमांशु चंद्रा के एवं जिला पंचायत सीईओ श्री अमन वैष्णव , के मार्गदर्शन में सामाजिक न्याय विभाग एवं रेडक्रॉस संचालित जिला दिव्यांग पुनर्वास केंद्र नीमच द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जावद 11जून2025 को प्रात: 10:00 बजे से दिव्यांग प्रमाण पत्र बनाने शिविर आयोजित किया जा रहा है। इस शिविर में दिव्यांग हितग्राहियों को प्रमाण पत्र बनवाने के लिए परीक्षण करवाने के लिए आवश्यक दस्तावेज जेसे यदि पुराना दिव्यांग प्रमाण पत्र पहले से बना हो ओर 5 वर्ष की अवधि समाप्त हो गई हो तो उसकी फोटोकॉपी, आधार कार्ड, समग्र आईडी, राशन कार्ड, की दो-दो फोटो कॉपी एवं दो पासपोर्ट साईज फोटो के साथ दिव्यांग हितग्राही को उपस्थित होना हैं उपसंचालक सामाजिक न्याय सुश्री किरण आंजना ने आधिकारिक दिव्यांग हितग्राहियों से इस शिविर में उपस्थित होकर इसका लाभ उठाने का आग्रह किया है।

कार्यालय अतिरिक्त क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी मंदसौर (मप्र)

क्रमांक क्यूयूई/2025 **मंदसौर, दिनांक 06.06.2025**

विज्ञप्ति

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि वाहन क्रमांक एमपी 14 सीसी 7938 जो कि परिवहन कार्यालय मंदसौर में निसार मोहम्मद मंसूरी पिता मो. इब्राहिम निवासी बोतलगंज, तह. मल्हारगढ़, जिला मंदसौर के नाम से पंजीकृत है।

यह सूचित किया जाता है कि वाहन स्वामी की मृत्यु दिनांक 16.03.2024 को हो चुकी है इसलिए उक्त वाहन का अंतरण अपने नाम से करने हेतु इकरार मो. मंसूरी पिता निसार मोहम्मद निवासी बोतलगंज, तह. मल्हारगढ़, जिला मंदसौर ने इस कार्यालय में आवेदन प्रस्तुत किया है। इस संबंध में जिस व्यक्ति को आपत्ति हो वह विज्ञप्ति प्रकाशन के सात दिवस के अंदर इस कार्यालय में प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित अवधि के पश्चात प्रस्तुत किसी आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा। अंतरण आवेदक के नाम पर कर दिया जावेगा।

अतिरिक्त क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी, मंदसौर

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक आशुतोष नवाल के लिए गुरु मीडिया एण्ड इंटरटेनमेन्ट कम्पनी, शक्ति नगर मन्दसौर से मुद्रित एवं 77 लक्ष्मीनगर, वेदान्त विहार मन्दसौर से प्रकाशित। (हर प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र मन्दसौर रहेगा) संपादक– आशुतोष नवाल RNI-MPHIN2006/20356
समाचार पत्र में छपे विज्ञापनों के लिए समाचार पत्र उत्तरादायी नहीं है एवं विज्ञापनो में प्रकाशित विचार विज्ञापनदाता की निजी राय है। इससे समाचार पत्र का कोई संबंध नहीं है। फोन 313880, मो. 9425105927,28 ashugurumds@gmail.com, ashu_guru2@yahoo.co.in